परिशिष्ट 19

अगुवापन
मसीही कलीसिया में अगुवेपन का ऐतिहासिक विकास

आज विभिन्न मसीह संप्रदायों के अगुवेपन संरचनाओं के विभिन्न प्रकार है। कैसे इस विकास ने स्थान लिया ? इस अध्यन का इरादा आपकी मसीह संगती के अगुवेपन संरचनाओं को बदलने का नहीं है। यह केवल नए नियम की अवधि के बाद की कई अगुवेपन संरचनाओं के ऐतिहासिक विकास का एक सारांश विवरण देना चाहता है।

क. प्राचीनों की नियुक्ति
(बाईबल आधारित शिक्षा) (30–97 ई.पू.)

1. नया नियम केवल प्राचीनों की संस्था की नियुक्ति सिखाता है।

1. यीशु मसीह अपने आत्मा के माध्यम से अगवाई करता है।

नया नियम अगुवापन श्रेणीबद्ध संरचना के किसी भी प्रकार को नहीं सिखाता है ! मण्डलियों (कलीसियाओं) के ऊपर कोई छाता संगठन नहीं था। पुनरुत्थान, उदगम और स्वर्ग में यीशु मसीह का राज्यभिषेक होने के बाद, उसने धरती पर शुरू किये कार्य को जारी रखा। (प्रेरितों के काम 1:1; यूहन्ना 7:37–39) और अपने चेलों पर अपना पवित्र आत्मा उंडेल दिया (प्रेरितों के काम अध्याय 2) (ई. 30)। पवित्र आत्मा यीशु मसीह का आत्मा है, जो हर एक मसीह के साथ और अंदर होने के लिए आया है, पृथ्वी पर यीशु मसीह का प्रतिनिधित्व करते हुए (यूहन्ना 14:16–18; यूहन्ना 16:13–15; रोमियों 8:9–10)। मण्डलियों को उनके सिर, यीशु मसीह के द्वारा नियंत्रित किया गया (इफिसियों 1:20–22), मसीह की आत्मा से (प्रेरितों के काम 9:31) और मसीह के वचन के माध्यम से (यूहन्ना 8:31; 14:21)।

(2) पवित्र आत्मा प्रेरितों और प्राचीनों की संस्था के माध्यम से अगुवाई करता है।

पवित्र आत्मा (मसीह का आत्मा) ने ग्यारह चेले का इस्तेमाल किया (प्रेरितों के काम 2:14) यहूदियों के बीच पहली मण्डली की स्थापना के लिए यरूशलेम में (प्रेरितों के काम 2:41–42) (ई. 30) और सारे यहूदिया में, गलील और सामरिया में आधे–यहूदियों के बीच (प्रेरितों के काम 8:1,4; प्रेरितों के काम 9:31) (ई. 30–40) और कैसरिया में गैर–यहूदियों (अन्यजातियों) के बीच (प्रेरितों के काम अध्याय 10 और 11) (ई. 40) और अन्ताकिया में (प्रेरितों के काम 11:19–24) (ई. 44)। यीशु मसीह के प्रेरित, अद्वितीय थे कि अगुवे थे जिन्होंने कलीसियाओं की स्थापना की और अद्वितीय, लेकिन अस्थायी अधिकार पाए हुए थे।

और पौलुस के परिवर्तन के बाद (प्रेरितों के काम 9:1–30) (करीब ई. 34) पवित्र आत्मा ने उसे किलिकिया में तुर्की में (गलतियों 1:21–23) (ई. 36–44) और सीरिया में (प्रेरितों के काम 11:25–26) (ई 44–46) मण्डलियों की स्थापना के लिए इस्तेमाल किया। अन्ताकिया की मण्डली ने यरूशलेम की मण्डली के प्राचीनों को उपहार भेजा है (प्रेरितों के काम 11:30) । बाद में पवित्र आत्मा ने पौलुस और बरनबास को धर्म–प्रचार यात्रा के लिए अलग किया जिसके लिए वह बुलाए गए थे (प्रेरितों के काम 13:1–4)।

पहली धर्म–प्रचार यात्रा (ई. 47–48) पर उन्होंने हर जगह मण्डलियों (कलीसियाओं) की स्थापना करीरू साइप्रस में (प्रेरितों के काम 13:4–5) और विशेष रूप से तुर्की में (गलातियों 1:21–23) (ई. 36–43) और सीरिया में (प्रेरितों के काम 11:25–26) (ई. 44–46) और हर मण्डली के लिए प्राचीनों की परिषद को नियुक्त किया (प्रेरितों के काम 14:21–23) । यरूशलेम सम्मेलन के दौरान अन्ताकिया और यरूशलेम (प्राचीन और प्रेरित जो अभी भी यरूशलेम में रहते थे), पतरस, यूहन्ना और याकूब ने पौलुस के माध्यम से परमेश्वर की सेवकाई को स्वीकार किया (प्रेरितों के काम 15:1–35; गलातियों 2:1–10)।

दूसरी मिशनरी यात्रा (ई. 50–52) पर पौलुस और उसके साथियों ने तुर्की, मैसेडोनिया और ग्रीस (प्रेरितों के काम 18:22 से 15:36) के शहरों में मण्डलियों की स्थापना की।

तीसरी मिशनरी यात्रा (ई 52–57) पर उन्होंने तुर्की और ग्रीस (प्रेरितों के काम 21:16 से 18:23) में सेवा की, कुरिन्थ (प्रेरितों के काम 18:11) में 1 $_{1/2}$ साल के लिए और इफिसुस में लगभग 3 साल के लिए (प्रेरितों के काम 19:8–10) । मीलेतुस में पौलुस ने इफिसुस की मण्डली के प्राचीन निकाय को निर्देश दिए, कहते हुए कि पवित्र आत्मा ने प्राचीन निकाय को मण्डली के अधिदर्शक और चरवाहे होने के लिए नियुक्त किया था (प्रेरितों के काम 20:17,28) (ई. 57)।

रोम में अपनी पहली कारावास (ई. 60–61) के दौरान पौलुस ने इफिसुस और फिलिप्पी की मण्डलियों को पत्र लिखा था और उल्लेख

किया की वहाँ अधिदर्शक और सेवक थे (1 तीमुथियुस 3:1,12; फिलिप्पियों 1:1)।

अपनी चौथी मिशनरी यात्रा (ई. 61–64) पर पवित्र आत्मा ने प्रेरित पौलुस को तिमोथी और तीतुस को पत्र लिखने के लिए (2 तीमुथियुस 3:16) प्रेरित किया और निर्देश देने के लिए कि प्रत्येक मंडली के नेतृत्व में क्या किया जाना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:14–15), नामतः, प्राचीन निकाय के माध्यम से (1 तीमुथियुस 4:14), उनकी शर्तों, कार्य और अधिकार के लिए (1 तीमुथियुस 3:1–7; 1 तीमुथियुस 5:17–22; तीतुस 1:5–9)।

पवित्र आत्मा ने प्रेरित पतरस को भी (ई. 63–65) (2 पतरस 1:20–21; 2 पतरस 3:1–16) तुर्की के प्रांतों में मण्डलियों को अपने पत्र लिखने के लिए प्रेरित किया (1 पतरस 1:1) और निर्देश देने के लिए कि प्रत्येक मण्डली का नेतृत्व कैसे किया जाना चाहिए, नामतः प्राचीन निकाय के माध्यम से (''प्राचीन'' बहुवचन में) । उसने आवश्यक शर्तें, कार्य और प्राचीनों के अधिकार (1 पतरस 5:1–7) के बारे में भी निर्देश दिए ।

इस प्रकार, नए नियम की अवधि के दौरान प्रेरितों और उनके साथियों ने नई मण्डलियों को स्थापित किया और हर मण्डली के लिए प्राचीन निकाय नियुक्त किया प्रेरितों के काम 14:23; तीतुस 1:5)। प्राचीन निकाय को एक ''परेसबुटेरिअन'', ''एक परिषद या प्राचीन मण्डल'' (1 तीमुथियुस 4:14) कहा जाता था।

पदाधिकारी व्यक्ति को ''प्राचीन''[1] कहा जाता था (प्रेरितों के काम 20:17; 1 पतरस 5:1); और कभी–कभी ''एक अधिदर्शक''[2] (तीतुस 1:7 पद्य 5 की तुलना करें) या ''एक चरवाहा''[3] (प्रेरितों के काम 20:17,28; फिलिप्पियों 1:1; 1 तीमुथियुस 3:21)।

मण्डलियों में प्राचीनों के लिए प्रयुक्त अन्य शब्द थेः ''प्राचीन या मार्गदर्शक''[4] (प्रेरितों के काम 15:22; इब्रानियों 13:7,17,24), ''मुखिया व्यक्ति''[5] (शासक, निदेशक, प्रबंधक) (रोमियों 12:8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; 1 तीमुथियुस 5:17) और ''घर प्रबंधक'' (शाब्दिकः अर्थशास्त्रि, प्रबंधक) 6 (तीतुस 1:7)।

नए नियम की अवधि के दौरान (ई. 30–97), पदः प्राचीन[7], अधिदर्शक[8], चरवाह[9] और वह पदाधिकारी व्यक्ति[10] (1 थिस्सलुनीकियों 5:12) या निदेशक[11] (1 तीमुथियुस 5:17) सभी एक और एक ही व्यक्ति के लिए दिखाते हैं किसी भी भेदभाव के (अधिनियमों 20:17,28; 1 पतरस 5:1–2), क्योंकि नया नियम केवल प्राचीनों की नियुक्ति की बात करता है और किसी भी अन्य प्रकार के अगुवे (अगुवों से ऊपर) की नहीं !

मण्डली का नेतृत्व प्राचीन निकाय के द्वारा होता था (मण्डल या प्राचीनों का परिषद)[12] (1 तीमुथियुस 4:14) । सभी प्राचीन बराबर थे, भले ही कुछ प्राचीनों के पास प्रचार करने और सिखाने का कार्य भी था (1 तीमुथियुस 5:17)। प्राचीनों ने कोई धार्मिक प्रशिक्षण कलिज या बाइबल विद्यालय में प्राप्त नहीं किया। वे सिर्फ मण्डली में सबसे परिपक्व विश्वासी थे और नेतृत्व करने के लिए बाइबिल की योग्यता और बाइबिल कार्यों के आधार पर नेतृत्व के लिए चुने गए थे।

हर एक मण्डली अन्य मण्डलियों से संगठनात्मक स्वतंत्र थी (डोटा नियमावली 03 परिशिष्ट 12, शब्द ''कलीसिया''[13] के अर्थ को देखें)।

---

[1] यूनानीः प्रेसबुटेरोस, हिन्दीः याजक, प्राचीन
[2] यूनानीः एपिस्कोपोस, हिन्दीः धर्माध्यक्ष, पर्यवेक्षक
[3] यूनानीः पोइमन, लैटिन और हिन्दीः पादरी, चरवाहा
[4] यूनानीः हैगोउमोनोस
[5] यूनानीः प्रोहिस्टेमेनोस
[6] यूनानीः ओइकोनोमोज
[7] यूनानीः प्रेसबुटेरोस, हिन्दीः याजक, प्राचीन
[8] यूनानीः एपिस्कोपोस, हिन्दीः धर्माध्यक्ष, पर्यवेक्षक
[9] यूनानीः पोइमनय लैटिनः पादरी और हिन्दीः पादरी, चरवाहा
[10] यूनानीः प्रोहिस्टेमीनोस हूमन
[11] यूनानीः प्रोहेस्टटेस परेसबुटेरोइ
[12] यूनानीः परेसबुटेरिअन
[13] यूनानीः एककलेसिया

(2) नया नियम किसी भी छाता संगठन (धर्मसभा या परिषद) की नियुक्ति नहीं सिखाता है।

यरूशलेम में मसीहों के महान सताव (प्रेरितों के काम 8:1–4) के बाद (लगभग ई. 33), विश्वासी विभिन्न देशों में फैल गए और सुसमाचार प्रचार किया। लोगों की एक बड़ी संख्या (ई. 44 से पहले) सीरिया में अन्ताकिया में यीशु मसीह में विश्वासी बन गए। यरूशलेम की मण्डली ने बरनबास को उनकी मदद करने के लिए भेजा । उसने तुर्की में तरसूस से पौलुस को अपनी मदद करने के लिए लिया (प्रेरितों के काम 11:25–27) (ई. 44–46)। अन्ताकिया में मण्डली की स्थापना इस सारे धर्म–प्रचार कार्य के परिणाम के रूप में हुई।

बाद में कई यहूदी मसीही यरूशलेम से अन्ताकिया को गए और इन अन्यजाति लोगों का पीछा करने की कोशिश की कि उन्हें मसीही बनने से पहले खतना करवाने के द्वारा यहूदी बनना पड़ेगा ! उन्होंने उन्हें सिखाया कि बचाये जाने से पहले उनका शारीरिक रूप से खतना होना चाहिए (प्रेरितों के काम 15:1)। अन्ताकिया की मण्डली ने बरनबास और पौलुस को इस समस्या का हल करने के लिए यरूशलेम में मण्डली को मिलने के लिए भेजा। दो स्थानीय मण्डलियों के बीच यह परामर्श धर्मसभा या सभी चर्चों का परिषद नहीं था, क्योंकि इस क्षेत्र में अन्य मण्डलियाँ (स्थानीय कलीसियाएँ) या पूरी दुनिया में मण्डलियाँ प्रतिनिधित्व नहीं कर रहीं थीं !

इसके अलावा, प्रेरितों के काम 15 केवल कैसे कलीसिया के इतिहास में एक समस्या हल किया गया था से संबंधित है, लेकिन यह नहीं सिखाता है कि कैसे एक समस्या का समाधान किया जाना चाहिए। यह एक अच्छा उदाहरण है कि कैसे दो अलग–अलग मसीही मण्डलियाँ एक साथ मिल कर पारस्परिक समस्या को हल कर सकती हैं, लेकिन बाइबिल यह नहीं सिखाती कि परमेश्वर ने किसी देश में सभी मौजूदा मण्डलियों (स्थानीय कलीसियाएँ) पर या दुनिया में अध्यक्षता (शासन) करने के लिए धर्मसभा या परिषद को नियुक्त किया है !

ख. धर्माध्यक्षों का ऐतिहासिक विकास
(एक श्रेणीबद्ध अगुआई) (ई. 97–323)

1. ऐतिहासिक विशेषताएँ ।

कलीसिया के इतिहास की यह अवधि मसीही कलीसिया के अंदर कई संघर्षों द्वारा चिह्नित है। यह यहूदियों के धर्म के आंतरिक प्रभावों और अन्य जातियों के बुतपरस्त धर्मों और रोमी साम्राज्य की राजनीति के बाहरी प्रभावों और उसके बुतपरस्त दर्शन की वजह से था। अंत में, ''दुनिया भर'' मसीही कलीसिया विजयी रही थी। शब्द ''दुनिया भर'' (यूनानीः कैथोलिकोस) का मतलब ''सामान्य'', ''सार्वजनीन'' एक अकेली मण्डली (एक स्थानीय कलीसिया) के विपरीत है। ''दुनिया भर'' के लिए शब्द ''कैथोलिक'' इस ग्रीक शब्द से लिया गया है।

2. श्रेणीबद्ध अगवाई संरचना बनाने के लिए बाईबल पारिभाषिक के परिवर्तन ।

दूसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान ''इस्राएल राष्ट्र–राज्य के समारोहपूर्ण व्यवस्था के पुराने नियम की अगुवाई'' (''महायाजक'', ''याजक'' और ''लेवियों'' से मिलकर) एक महान्तशाही में बदल गई थी और ''नए नियम कलीसिया की अगुवाइ'' पर बिना अधिपत्र के अधिरोपित की ।

(1) पारम्परिक धर्माध्यक्षों की उत्पत्ति।

इस अवधि के दौरान, यूनानी शब्द ''एपिस्कोपोस'' (जिसका अर्थ है ''अधिदर्शक'') (हिन्दीः धर्माध्यक्ष) ने प्राचीनों के कार्यों में से एक को वर्णित नहीं किया, मण्डली में अगुवाई के कार्य, लेकिन सभी स्थानीय कलीसियाओं के प्राचीनों के ऊपर एक नया कार्य और पदवी का वर्णन करना शुरू किया। एक ही व्यक्ति के लिए शब्द ''धर्माध्यक्ष'' इस्तेमाल किया जाने लगा जो दुनिया भर में कलीसिया में एक प्रकार का नए नियम का महायाजक बन गया। स्थानीय मण्डली में अधिदर्शक या पर्यवेक्षक होने के बजाय, दुनिया भर में कलीसिया में वह ''अधिदर्शक'' या जिले का अगुवा, दुनिया भर में कलीसिया में सर्वोच्च पद बन गया। प्रेरितों की मृत्यु हो गई थी तो अधिदर्शकों को बिना बाईबल अधिपत्र के ''प्रेरितों के उत्तराधिकारियों'' के रूप में माना गया !

धीरे–धीरे यह माना जानने लगा कि केवल धर्माध्यक्ष बपतिस्मा, प्रभु भोज, शादी और अंतिम संस्कार सेवाओं और प्राचीनों के अभिषेक के रूप में मसीही कलीसिया की आधिकारिक सेवकाईयों का प्रदर्शन कर सकते थे। इस रीति से धर्माध्यक्षों ने खुद को कलीसिया के लिए परम आवश्यक बना दिया ! दूसरी और तीसरी शताब्दी ईस्वी के धर्माध्यक्षों ने किसी भी बाईबल के अधिकार या औचित्य के बिना खुद

को कलीसिया का अगुवा बना लिया ! धर्माध्यक्ष ने स्थानीय मण्डलियों या जनपदों के एक पूरे क्षेत्र का नेतृत्व किया। इस अवधि के समय में धर्माध्यक्ष खुद किसी के द्वारा अधीक्षण में नहीं थे।

(2) पारम्परिक याजकों (पादरियों) की उत्पत्ति।

इस अवधि के दौरान यूनानी शब्द ष्प्रेसबुटेरोसष (अर्थः प्राचीन) (हिन्दीः याजक); मसीह कलीसिया में मूल और केवल अगुवाई के कार्य को अब कोई वर्णित नहीं कर रहा था जो की प्राचीन निकाय में सांझी अगुवाई थी (प्रेरितों के काम 14:23; प्रेरितों के काम 20:17,28; 1 पतरस 5:2–4) । शब्द ''याजक'' एक ही व्यक्ति के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा जो एक प्रकार का एक मण्डली (पल्ली) में नए नियम का याजक बन गया । एक याजक ही अगुवा, चरवाहा या एक स्थानीय मण्डली या पल्ली का पादरी बन गया बजाय प्राचीन निकाय[14] बने ।

धीरे–धीरे यह माना जाने लग गया था कि केवल याजक ही स्थानीय मण्डली में उपदेश और बाद में संस्कार प्रदर्शन के रूप में कुछ सेवकाईयाँ प्रदर्शन कर सकते हैं। जनपदों के सभी याजकों की देखरेख धर्माध्यक्ष के द्वारा होती थी।

- **(3) पारम्परिक सेवक की उत्पत्ति।**

इस अवधि के दौरान यूनानी शब्द ''डियाकोनोस'' (अर्थः नौकर) (हिन्दीः उपयाजक) अब स्थानीय मण्डली में सेवा के मूल कार्य को वर्णित नहीं किया गया जो अन्य सेवकों के साथ साझा किया गया था (प्रेरितों के काम 6:3; फिलिप्पियों 1:1)। शब्द ''उपयाजक'' एक व्यक्ति के लिए के लिए इस्तेमाल किया जाने लगा जो एक स्थानीय मण्डली में एक प्रकार से नए नियम का लेवी बन गया था। एक उपयाजक स्थानीय मण्डली या पल्ली के याजक (चरवाहा या पादरी) के सहायक या नौकर की तरह था। एक उपयाजक की देखरेख एक पुजारी (चरवाहा या पादरी) के द्वारा की जाती थी।

- **(4) लेकिन इन पारम्परिक कार्यों का कोई बाईबल आधार या अधिकार नहीं है।**

इस प्रकार नए नियम की अवधि के बाद, दूसरी और तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान, नेतृत्व की अवधारणा के ऐतिहासिक विकास ने मसीही कलीसिया में जगह ले ली । हालांकि, इस ऐतिहासिक विकास का कोई बाईबल आधार या अधिकार नहीं था !

इग्नाटियस (110 ई.) में अकेला प्रेरित पिता हुआ है जिसने राजतंत्रीय धर्माध्यक्ष (एक धर्माध्यक्ष का नियम) पर जोर दिया था । लेकिन उसने भी यह कभी नहीं कहा कि यह एक दिव्य संस्था है। वह केवल उनकी निजी राय थी। जेरोम (384 ई.) ने तीतुस 1:5 पर अपनी टिप्पणी में कहा कि एक ही धर्माध्यक्ष की सर्वोच्चता ''परमेश्वर के वास्तविक नियुक्ति के बजाए रिवाज के द्वारा से'' उठी, मसीही कलीसिया में विघटन को रोकने के लिए एक साधन के रूप में (वास्तव में हर किसी को कलीसिया में नियन्त्रित करने के लिए)।

लेकिन, न तो पुराना नियम है और न ही नया नियम मसीही कलीसिया में किसी पद की महान्तशाही सिखाता है ! और कलीसिया का इतिहास हमें सिखाता है कि एक नई कलीसिया के पद के रूप में धर्माध्यक्ष की नियुक्ति ने विघटन को नहीं रोका था ! वास्तव में कलीसिया में धर्माध्यक्षों के मध्य सर्वोच्च स्थान के लिए संघर्ष था (मत्ती 20:25–28 का उल्लंघन) जिससे अगुवों के बीच महान्तशाही आयी और कलीसिया में विघटन कई गुणा हो गया !

3. धर्माध्यक्ष और धर्माध्यक्षों की व्यवस्था ।

रोमी साम्राज्य में हर जगह और उससे परे भी, नई मसीही कलीसियाएँ अस्तित्व में आयीं। बाईबल सिखाती है कि मसीहों की केवल एक ''माँ'' है (अर्थात, स्वर्गीय यरूशलेम) (गलतियों 4:26)। लेकिन अगुओं की एक बडी संख्या तथाकथित ''मां कलीसियाएँ'' तथाकथित ''बेटी कलीसियाएँ'' की बात को जाने देना नहीं चाहते थे जिनकी स्थापना उन्होंने की थी। अतः स्वतंत्र मण्डली के प्राचीन के कार्य को एक नए पद में बदलकर (नामतःअधिदर्शक होते हुए) सभी स्थानीय मण्डलियों के सभी प्राचीनों के ऊपर मसीही कलीसिया में एक नया पद बनाया गया । नए पद या पदवी को ''धर्माध्यक्ष''[15] बुलाया गया था। धर्माध्यक्ष माँ कलीसिया के साथ ही साथ बेटी कलीसियाओं की देखरेख भी करता था। माँ कलीसिया अपने धर्माध्यक्ष के साथ सत्ता से जाना नहीं चाहती थी। वह शासन और नियंत्रण करना चाहती थी !

---

[14] यूनानीः परोइकिया, हिन्दीः पल्ली

[15] यूनानीः एपिस्कोपोसय हिन्दीः धर्माध्यक्ष

नए नियम में शब्द ''धर्माध्यक्ष'' ने केवल एक प्राचीन के पद के कार्य का वर्णन किया है। लेकिन दूसरी शताब्दी के दौरान शब्द ''धर्माध्यक्ष'' ने एक नया पद या पदवी का वर्णन करना शुरू किया।

नए नियम में प्राचीन निकाय[16] का कार्य स्वतंत्र मण्डली का प्रेक्षण[17] करना था। लेकिन दूसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान एक ही धर्माध्यक्ष एक विशेष क्षेत्र में सभी निर्भर मण्डलियों पर अधिदर्शक या पर्यवेक्षक बन गया !

केवल नए नियम कलीसिया में प्रेस्बायटेरिअल[18] नेतृत्व संरचना थी, अर्थात, हर मण्डली स्वतंत्र थी और पुरोहित निकाय या प्राचीनों के नेतृत्व में थीं (शब्द ''प्राचीन'' हमेशा बहुवचन में होता है)। लेकिन दूसरी और तीसरी शताब्दी के दौरान मसीही कलीसिया एपिस्कोपल[19] नेतृत्व संरचना में विकसित हुई, अर्थात, क्षेत्र में पिछली सभी स्वतंत्र मण्डलियों को निर्भर मण्डलियाँ बना दिया गया और एक धर्माध्यक्ष के अंतर्गत रखा गया (शब्द ''धर्माध्यक्ष'' विलक्षण है)। एक पुरोहितसंघ नेतृत्व संरचना से एक धर्माध्यक्षीय नेतृत्व संरचना का सटीक ऐतिहासिक विकास काफी स्पष्ट नहीं है। एक विशेष क्षेत्र में सभी निर्भर मण्डलियों ने धर्माध्यक्ष के नेतृत्व में एक बिशोपरिक[20] का गठन किया।

नए नियम में एक स्वतंत्र मण्डली का नेतृत्व करने के लिए केवल एक स्वतंत्र निकाय या एल्डर्स[21] का परिषद चुने गए थे। लेकिन दूसरी और तीसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान वहाँ एक बिशप[22] निर्भर मण्डलियों के एक पूरे क्षेत्र में अग्रणी था। यह धर्माध्यक्ष अन्य धर्माध्यक्षों से स्वतंत्र था। यह मसीही कलीसिया में श्रेणीबद्ध नेतृत्व संरचना की दिशा में पहला कदम था।

इस ऐतिहासिक विकास के लिए बाईबल का कोई अधिपत्र नहीं है! नया नियम श्रेणीबद्ध नेतृत्व संरचना के बारे में न कोई आज्ञा देता, सिखाता या यहां तक कि संबंधित भी नहीं है!

ग. पादरियों की सभाओं और परिषदों का ऐतिहासिक विकास (एक श्रेणीबद्ध सर्वनिहित संरचना) (ई.195–1870 के बाद)।

कलीसिया के इतिहास से पता चलता है कि कैसे मसीही कलीसिया में अगुवों ने चतुराई से खुद को उच्च नेतृत्व की स्थिति में पहुँचाया !

1. मण्डलियों की पादरियों की सभा (जलसा)[23]।

प्रेरितों के काम 15 अध्याय में दो अलग–अलग मण्डलियाँ खतने की समस्या पर चर्चा के लिए एक साथ इकट्ठे हुए। लेकिन यह जलसा एक विशेष क्षेत्र में सभी स्थानीय मण्डलियों का प्रतिनिधि जलसा नहीं था !

दूसरी शताब्दी ईस्वी के दौरान हम पहली बार एशिया (आधुनिक तुर्की) के प्रांत में मसीही कलीसिया के प्रतिनिधि जलसों के बारे में पढ़ते हैं। पड़ोसी मण्डलियों के प्रतिनिधियों को एक धर्माध्यक्ष की पदच्युति या नियुक्ति (!) और मण्डलियों के झूठी शिक्षा (नई भविष्यवाणी की) रखने वाले सदस्यों के बहिष्कार के लिए आमंत्रित किया गया था।

ई. 195 में भी मसीही कलीसिया का इस तरह का जलसा गॉल (आधुनिक फ्रांस) में था जहां आयरेनेउस धर्माध्यक्ष था। इस जलसे के प्रतिनिधी प्राचीन, सेवक और मण्डलियों के सदस्य थे।

---

[16] यूनानीः प्रेसबुटेरिओन, हिन्दीः पूजास्थान, शब्द ''पुरोहित'' से लिया गया है जिसका अर्थ है ''प्राचीन''।
[17] यूनानीः एपिसकोपिओ
[18] शब्द ''प्रेस्बायटेरिअल'' शब्द ''पुरोहित'' से लिया गया है, जो ''एक प्राचीन'' के लिए यूनानी शब्द है।
[19] शब्द ''एपिस्कोपल'' शब्द ''एपि'' और ''सकोपिआ'' से लिया गया है, जो यूनानी शब्द हैं ''के ऊपर + देखना''
[20] एक ''धर्माध्यक्ष व्यवस्था'' है ''देखना'' या ''धर्माध्यक्ष या बाद में मुख्य धर्माध्यक्ष के लिए प्रतिबद्ध टुकड़ी''
[21] यूनानीः प्रेसबुटेरिओन
[22] यूनानीः एपिस्कोपोस
[23] यूनानीः ''ष्सुनोडोस'' का मतलब है साथी यात्री और प्रेम की एक ही सड़क पर यात्रा करने वाले लोगों के लिए आलंकारिक है (इफिसियों 9रू 1–2 से इग्नेशियस)।
[24] ईसाई विश्वकोश, कोक, कैम्पेन 1929

2. धर्माध्यक्षों की धर्मसभा (परिषद)।

तीसरी और चौथी शताब्दी ईस्वी के दौरान वेदांत धर्माध्यक्षता (कई अलग–अलग मण्डलियों पर एक ही धर्माध्यक्ष सत्तारूढ़) का विकास जारी रहा। इस अवधि के दौरान स्थानीय मण्डलियों के प्रतिनिधियों के जलसे (धर्मसभाएँ या परिषद) विशेष रूप से धर्माध्यक्षों की धर्मसभाओं या परिषदों (जलसों) में बदल गए।

रोम की धर्मसभा में प्रतिनिधि (ई. 254), अन्ताकिया (ई. 264, ई. 269) और एलविरा (ई. 305) धर्माध्यक्ष होने के अलावा, प्राचीन भी, सेवक और मण्डलियों के सदस्य भी थे। लेकिन अलेक्जेंड्रिया और इकुनियुम (ई. 235) के दूसरे धर्मसभा में प्रतिनिधि केवल धर्माध्यक्ष थे।

नाइसिआ की धर्मसभा में (ई. 325), जिसमें सेवक अभी भी भाग लेते थे, पहली धर्मसभा या परिषद थी जिसमे केवल धर्माध्यक्ष शामिल थे (!) और फैसला किया कि केवल धर्माध्यक्ष (!) मण्डलियों24 के सरकारी प्रतिनिधि हैं ! यही कारण है कि रोमन कैथोलिक कलीसिया ने नाइसिआ के परिषद को बना दिया ष्पहला परिषदष ! हालांकि धर्माध्यक्ष मूल रूप से मण्डलियों के सदस्यों द्वारा चुने जाते थे, चौथी शताब्दी ईस्वी से, मण्डलियों के सदस्यों को धर्मसभा (परिषदों) से बाहर निकाल दिया गया और निर्णय लेना धर्माध्यक्षों के लिए अनन्य विशेषाधिकार बन गया !

3. प्रांतीय धर्मसभाएँ (मुख्य धर्माध्यक्षों) के नेतृत्व में)।

चौथी सदी ईस्वी तक बड़े शहरों के धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) छोटे शहरों और कस्बों के धर्माध्यक्षों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बन गया। इसके अलावा धर्मसभाएँ (परिषद), जो इन शहरों में आयोजित की गईं, प्रांतीय धर्मसभाएँ (परिषद) बन गईं। सबसे पहले एक बड़े शहर के धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) ने इन प्रांतीय धर्मसभाओं की अध्यक्षता एक विशेषाधिकार के रूप में की, लेकिन जल्द ही यह एक कानूनी अधिकार में बदल गया ! इस तरह से एक महानगर के धर्माध्यक्ष (बाद में: ''मुख्य धर्माध्यक्ष'') एक प्रांत में सभी धर्माध्यक्षों के प्रमुख बने।

उदाहरण के लिए, पश्चिम में रोम का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) इटली में सभी धर्माध्यक्षों का प्रमुख बनाय अलेक्जेंड्रिया का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) मिस्र, लीबिया और पैंटापोलिस में सभी धर्माध्यक्षों का मुखियाय कार्थेज का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) पश्चिम अफ्रीका में सभी धर्माध्यक्षों का मुखियाय और लीओन का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) गॉल (फ्रांस) में सभी बिशप के सिर। इसी तरह यरूशलेम के पूर्व बिशप (मुख्य धर्माध्यक्ष) में फिलिस्तीन में सभी बिशप के प्रमुख बनेय बिशप अन्ताकिया की (मुख्य धर्माध्यक्ष) सीरिया में सभी धर्माध्यक्षों का मुखियाय और कुरिन्थ का धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष) ग्रीस में सभी धर्माध्यक्षों का मुखिया।

नाइसिआ 1 की धर्मसभा (परिषद) (ई. 325) ने निर्णय लिया कि यह बड़ी प्रांतीय धर्मसभाओं को एक साल में दो बार मुख्य धर्माध्यक्ष (बड़े शहर के धर्माध्यक्ष) के नेतृत्व में मिलना चाहिए और कि केवल धर्माध्यक्षों को मतदान का अधिकार था !

4. दुनियावी (दुनिया भर में) धर्मसभाएँ (परिषद)।

(1) 8 पूर्वी और 13 पश्चिमी परिषद।

धर्माध्यक्षों की बढती शक्ति ने सभी धर्मसभाओं (परिषदों) में उनके प्रभुत्व का नेतृत्व किया। दुनियावी धर्मसभाएँ (परिषद) प्रांतीय धर्मसभाएँ (परिषद) के समानांतर विकसित हुईं। 21 वीं शताब्दी तक 8 पूर्वी परिषद और 13 पश्चिमी परिषद, कुल 21 परिषद[25]। पहली 8 (पूर्वी) परिषदों को रोम (राजनीतिक) के सम्राट द्वारा एक साथ बुलाया गया:

(1) नाइसिआ 1 (325 ईस्वी)
(2) कांस्टेंटिनोपल 1 (381 ईस्वी)
(3) इफिसुस (431 ईस्वी)
(4) कैल्सेदोन (451 ईस्वी)
(5) कांस्टेंटिनोपल 2 (553 ईस्वी
(6) कांस्टेंटिनोपल 3 (680–681 ईस्वी)
(7) नाइसिआ 2 (787 ईस्वी)
(8) कांस्टेंटिनोपल 4 (869–870 ईस्वी)

(2) सुधारी हुईं तीन परिषद।

परिषदों में पोप के प्रभाव में वृद्धि हुई जब तक 1204 में जेहादियों द्वारा कांस्टेंटिनोपल की लूट पर पूर्वी और पश्चिमी कलीसिया के बीच फूट समापक बनी। तथाकथित सुधार परिषद थे:
पीसा की 16 वीं परिषद (1407)

---

[25] देखें ''www-catholicism-org/ रोमन कैथोलिक कलीसिया के दुनियावी परिषद''। इसमें सारी हठधर्मिता का सारांश है जो की तैयार किया गया था और झूठी शिक्षाऐं जिनकी इन परिषदों में निंदा की गई थी।

कॉन्सटांज की 17 वीं परिषद (1414–1418)[26]
बेसल की 18 वीं परिषद (1431–1443)।

ये सुधार परिषदों ने पोप (रोम के धर्माध्यक्ष) की शक्ति को तोड़ने और पोप के ऊपर धर्माध्यक्षों की परिषद को स्थापित करने कोशिश की। मसीही कलीसिया के लिए दुर्भाग्य पदक्रम सिद्धांत विजयी रहा था।

(3) सुधार–विरोधी परिषद और पहली वेटिकन परिषद।

सुधार जिसके द्वारा प्रोटेस्टेंट कलीसिया आयी की शुरुआत मार्टिन लूथर के साथ 1517 में शुरू हुई।

ट्रेंट (1545–1563) के पश्चिमी कलीसिया का 21वाँ परिषद (अर्थात रोमन कैथोलिक कलीसिया) एक सुधार–विरोधी परिषद था।

22 वाँ परिषद रोम (1869–1870) में वेटिकन में आयोजित किया गया था। रोमन कैथोलिक कलीसिया के सदस्यों के महान प्रभाव के तहत इस परिषद ने 18 जुलाई 1870 को ''पोप की अभ्रांतता'' का फैसला किया, एक सिद्धांत जिसे सब रोमन कैथोलिकों को विश्वास करना था ! भविष्य में परिषदों में लिए गए सभी निर्णय पोप द्वारा पुष्टि किए जाने थे !

घ. मुख्य धर्माध्यक्षों का ऐतिहासिक विकास, वयोवृद्ध और पोप (शीर्ष श्रेणीबद्ध) (ई 325 –600)।

परिषदों के भीतर धर्माध्यक्षों के बीच सत्ता संघर्ष था कि कौन सबसे ज्यादा और सबसे महत्वपूर्ण धर्माध्यक्ष है। इस तरह दुनिया में कैसरों के बीच अनात्मिक सत्ता संघर्ष कलीसिया में भी धर्माध्यक्षों के बीच अनात्मिक सत्ता संघर्ष बन गया !

1. ऐतिहासिक विशेषताऐं।

पहले दो शताब्दियों ईसवी के दौरान मसीही रोमी कैसर द्वारा सताए गए। लेकिन क्योंकि मसीहत बढ़ रही थी और बुतपरस्त धर्म जमीन खो रहे थे, कैसर कॉनस्टैनटिन ने ईस्वी 311 में मसीहों के लिए सुरक्षा का वादा किया। उसने और उसके सह–कैसरों ने ईस्वी 313 में मिलान के फतवे जारी किए और रोमी राज्य में मसीह धर्म को अन्य धर्मों के बराबर का दर्जा दिया। 306 और 323 के बीच दो ''ऑगस्टा'' की मृत्यु हो गई और तीन अन्य अगस्ता (मैक्सेंटियस, मैक्सिमिनस और लुसिनियस) हार गए थे। कॉनस्टैनटिन ने मसीहों के परमेश्वर को उसकी जीत के लिए जिम्मेदार माना और 323 में ''मसीही'' बन गया। हालांकि, उसने कभी कलीसिया की सभा में भाग नहीं लिया और उसके सिक्के मसीह को और उसके दो पक्षों पर अपराजेय सूर्य–देवता को दिखाते थे। ई. 323 से मसीह धर्म राजकीय धर्म बन गया और कॉनस्टैनटिन ने खुद को ''चर्च के विदेशी मामलों का धर्माध्यक्ष'' कहा। ई. 326 में उसने बाइजैन्टियम को मसीही विश्व साम्राज्य की राजधानी बनाया और उसका नाम बदल के कांस्टेंटिनोपल कर दिया (जो बाद में इस्तांबुल बन गया)। ई. 330 में वह राजनीतिक सत्ता के केंद्र को भी पश्चिम में रोम से पूर्व में कांस्टेंटिनोपल ले गया, वह भी शायद शक्तिशाली बुतपरस्त परिवारों के दबाव की वजह से।

चूंकि दुनिया कलीसिया में अग्रसर थी, तीसरी और चौथी शताब्दियों के दौरान मठवासी आदेश गृहस्थ–वर्ग और पादरियों के बीच खडे होने के लिए उभरे। जबकि साधारण मसीहों को परमेश्वर के नैतिक नियमों का पालन करना ही था, भिक्षुओं ने स्वेच्छा से खुद को ''संस्तुत चीजों'' जैसे उपवास और ब्रह्मचर्य से बाध्य कर लिया।

ई.450 तक पश्चिम में कुछ ही लोग यूनानी पढ़ सकते थे और ई. 600 तक पूर्व में कुछ ही लोग लैटिन में बोलते थे। राजनीतिक अखाड़े में दो शक्तिशाली साम्राज्य उभरेरू पूर्वी रोमी साम्राज्य कांस्टेंटिनोपल के साथ राजधानी के रूप में (ई. 476 तक) और राजधानी के रूप में रोम के साथ पश्चिमी रोमी साम्राज्य (ई. 1453 तक)। इन शताब्दियों में, पूर्व में यूनानी बोलती कलीसियाएँ और पश्चिम में लैटिन बोलती कलीसियाएँ एक दूसरे से अलग हो गए।

इस अवधि 325 से 600 ईस्वी के बीच तीन घटनाकर्मों ने ईसाई चर्च के भीतर जगह ले लीरू

- अध्यापन में मसीह सिद्धांत का विकास।
- आराधना सभाओं में मसीह समारोहों का बाह्यरूपन।
- नेतृत्व में मसीह पदानुक्रम का विकास।

---

[26] कॉन्सटांज का परिषद। ''क्रिस्टलिज्के एनसायक्लोपेडिए'' में पढ़ें इस परिषद में क्या हुआ, कोक कैम्पेन, 1925।

2. मुख्य धर्माध्यक्ष।

बड़े शहरों में रहते धर्माध्यक्ष को मुख्य धर्माध्यक्ष कहा जाता था। फिर मुख्य धर्माध्यक्षों ने उन मण्डलियों में जिन्हें यीशु मसीह के प्रेरितों ने स्थापित किया था और भी उच्च दर्जा प्राप्त किया। यह मुख्य धर्माध्यक्ष यरूशलेम के फिलिस्तीन, सीरिया में अन्ताकिया, तुर्की में इफिसुस, यूनान में कुरिन्थ, इटली में रोम, और मिस्र में अलेक्जेंड्रिया के शहरों में थे।

3. वयोवृद्ध।

नाइसिआ 1 की परिषद (ई. 325) ने रोम (पश्चिम में), अलेक्जेंड्रिया (दक्षिण में) और अन्ताकिया (पूर्व में) के धर्माध्यक्षों को अन्य धर्माध्यक्षों के ऊपर नियुक्त कर दिया और उन्हें ''वयोवृद्ध'' का शीर्षक दे दिया।

कांस्टेंटिनोपल 1 की परिषद (ई. 381) ने कांस्टेंटिनोपल के मुख्य धर्माध्यक्षों और इफिसुस की परिषद (ई. 431) ने यरूशलेम के मुख्य धर्माध्यक्षों को वयोवृद्ध की सूची में जोड़ा। इस प्रकार वहाँ पाँच वयोवृद्ध थेः रोम, अलेक्जेंड्रिया, अन्ताकिया, कांस्टेंटिनोपल और यरूशलेम में, कलीसिया में उच्चतम पदों पर ।

4. पोप।

(1) पोप।

धीरे–धीरे वहाँ दो वयोवृद्ध पूर्व–श्रेष्ठता के लिए प्रतिस्पर्धा कर थेरू रोम का वयोवृद्ध पश्चिम में और कांस्टेंटिनोपल का वयोवृद्ध पूर्व में। ई. 476 में पश्चिमी रोमी साम्राज्य के पतन के बाद, रोम के धर्माध्यक्ष शीर्षक 'वयोवृद्ध'' से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने मसीही कलीसिया में पूर्ण और सबसे महत्वपूर्ण पदवी के लिए निम्नलिखित तीन तर्क पर अपील से बोली लगाईः
उन्होंने मत्ती 16:18–19 को अपील किया, जिसका उन्होंने अनुवाद किया कि यीशु ने पतरस को प्रेरितों के बीच सर्वोच्च स्थान दिया । उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों से अपील की है कि दोनों प्रेरित पतरस और पौलूस रोम में रहते थे और काम किया।और उन्होंने कलीसिया की परंपरा पर अपील की है कि प्रेरित पतरस रोम का पहला प्रेरित था।

कांस्टेंटिनोपल में वयोवृद्ध शायद ही समयादेश और रोमी कैसर के खेलने की गेंद की तुलना में कभी अधिक थे। वे केवल राजनीतिक नेताओं के हाथ में एक उपकरण थे। इस प्रकार रोम वयोवृद्धों की पांच सीटों के रूप में न केवल वयोवृद्ध के बीच सबसे मानद पद पाता था (लैटिनः पृमाटुस ओनोरिस) लेकिन अंत में भी वयोवृद्धों के बीच सर्वोच्च पदवी (लैटिनः पृमाटुस ओरडिनीस) पाता था तथाकथित ईश्वरीय अधिकार के द्वारा, क्योंकि वे मत्ती 16:18–19 से सम्बंधित करते हैं। इस प्रकार राजनीति और धर्म के बीच सत्ता के संघर्ष में, पूर्व में कैसर जीता, लेकिन पश्चिम में वयोवृद्ध जीते !

2) राजतंत्रीय धर्माध्यक्षता।

रोम के धर्माध्यक्ष के रूप में पोप इनोसेंट 1 (401–417) ने अहंकार में दुनिया के सभी अन्य धर्माध्यक्षों की तुलना में अपने को उच्च अधिकारी होनें का खुद के लिए दावा किया। इस प्रकार रोमन कैथोलिक कलीसिया एक राजतंत्रीय धर्माध्यक्षता बन गया– धर्माध्यक्षों के महाविद्यालयएक की–एक अध्यक्षता में नेतृत्व , जिसमें कलीसिया में सबसे उच्च अधिकार रोम के धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष,वयोवृद्ध) के पास रहता है ।

रोम के धर्माध्यक्ष खुद को शीर्षक पिताजी (पोप) के साथ बुलाते थे, जिसका अर्थ है पिता । मूल रूप से सभी धर्माध्यक्षों को पापा के रूप में संबोधित किया जाता था, लेकिन अब इस शीर्षक का अकेले रोम के द्वारा दावा किया गया है। यीशु ने कहारू ष्पृथ्वी पर किसी को श्पिताश नहीं बुलाना , क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, और वह स्वर्ग में हैष् (मत्ती 23 2) राजतंत्रीय धर्माध्यक्षता।

रोम के धर्माध्यक्ष के रूप में पोप इनोसेंट 1 (401–417) ने अहंकार में दुनिया के सभी अन्य धर्माध्यक्षों की तुलना में अपने को उच्च अधिकारी होनें का खुद के लिए दावा किया। इस प्रकार रोमन कैथोलिक कलीसिया एक राजतंत्रीय धर्माध्यक्षता बन गया– धर्माध्यक्षों के महाविद्यालयएक की–एक अध्यक्षता में नेतृत्व , जिसमें कलीसिया में सबसे उच्च अधिकार रोम के धर्माध्यक्ष (मुख्य धर्माध्यक्ष,वयोवृद्ध) के पास रहता है ।

रोम के धर्माध्यक्ष खुद को शीर्षक पिताजी (पोप) के साथ बुलाते थे, जिसका अर्थ है पिता । मूल रूप से सभी धर्माध्यक्षों को पापा के रूप में संबोधित किया जाता था, लेकिन अब इस शीर्षक का अकेले रोम के द्वारा दावा किया गया है। यीशु ने कहाः ''पृथ्वी पर किसी को ''पिता'' नहीं बुलाना , क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, और वह स्वर्ग में है'' (मत्ती 23:19) !

(3) प्रधान पादरी (उच्चतम याजक और उच्चतम शासक)।

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है कि पोप के पास ''आध्यात्मिक और सांसारिक मामलों में सबसे अधिक अधिकार है।''
पोप ग्रेगरी 1 (ई 590–615) को पोप के पद की सांसारिक शक्ति (प्रधान पादरी) का संस्थापक कहा जाता है। पोप को केवल आध्यात्मिक मामलों में सर्वोच्च शक्ति के रूप में नहीं माना गया था, लेकिन सांसारिक मामलों में सर्वोच्च शक्ति के रूप में भी ! इस प्रकार पोप ने वह जगह ले ली जो केवल यीशु मसीह की थी !

हालांकि, यह दावा केवल यीशु मसीह के अंतर्गत आता है ! बाईबल कहती है, ''परमेश्वर ने यीशु मसीह को स्वर्गीय स्थानों में अपने दाहिने हाथ की तरफ बिठाया है, सभी नियम और अधिकार, सत्ता और प्रभुत्व, और हर शीर्षक जो दिया जा सकता है, न केवल वर्तमान

युग में ही लेकिन एक आने वाले के भी के ऊपर । और परमेश्वर ने उसके पैरों के नीचे सब बातों को रखा दिया है और उसे कलीसिया के लिए हर चीज का सिर होने को नियुक्त किया है'' (इफिसियों 1:20–22) !

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है कि पोप ''पूरी मसीही कलीसिया का सार्वभौमिक धर्माध्यक्ष'' है।

केवल पहली वेटिकन परिषद से ही (1870) रोम के धर्माध्यक्ष (पोप) को ''पूरी मसीही कलीसिया के सार्वभौमिक धर्माध्यक्ष'' के रूप में माना जाता है। यह दावा सुधारी हुई कलीसियाओं के खिलाफ शुरू किया गया था ! इस प्रकार पोप ने भी धर्माध्यक्ष के रूप में यीशु की जगह ले ली। बाईबल कहती है, ''आप भटक रही भेड़ की तरह थे, परन्तु अब तुम आने प्राण के चरवाहे और अधिदर्शक (यूनानीः धर्माध्यक्ष) के पास मुड़ आये हो'' (1 पतरस 2:25) !

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है कि पोप ''पूरी मसीही कलीसिया का चरवाहा है।''

पोप को भी ''पूरी मसीही कलीसिया का चरवाहा'' माना जाता है। इस प्रकार पोप ने मुख्य चरवाहे के रूप में यीशु मसीह की जगह ले ली। बाईबल कहती है, ''और जब मुख्य चरवाहा प्रगट होगा, तुम महिमा के ताज को पाओगे जो कभी ओझल नहीं होगा'' (1 पतरस 5:4; देखें यूहन्ना 10:16, इब्रानियों 13:20; 1 पतरस 2:25) !

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है कि पोप ''पृथ्वी पर मसीह का प्रतिनिधि है।''

पोप को ''पृथ्वी पर मसीह का प्रतिनिधि'' भी माना जाता है। इस प्रकार पोप ने पृथ्वी पर यीशु मसीह के प्रतिनिधि के रूप में पवित्र आत्मा (यूनानीः पैराक्लेटोस) की जगह ले ली। यीशु कहते हैं, ''और मैं पिता से माँगूंगा और वह तुम्हें एक और सलाहकार (यूनानीः पैराक्लेटोस) हमेशा आप के साथ होने के लिए दे देंगे – सत्य का आत्मा। संसार उसे स्वीकार नहीं कर सकता और न ही उसे जानता है। लेकिन आप उसे जानते हैं, क्योंकि वह आप के साथ रहता है और आप में होगा'' (यूहन्ना 14:16–17,26; यूहन्ना 16:7–15) !

• रोमन कैथोलिक कलीसिया का दावा है ''रोमन कैथोलिक कलीसिया के बाहर कोई मोक्ष नहीं है''।

ऊपर दावों के आधार पर रोमन कैथोलिक कलीसिया का तर्क है कि रोमन कैथोलिक कलीसिया के बाहर मोक्ष संभव नहीं है। इस प्रकार रोमन कैथोलिक कलीसिया ने एकलौते मुक्तिदाता के रूप में भी यीशु मसीह की जगह ले ली।

यीशु कहते हैं, ''मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता है'' (यूहन्ना 14:6)। और प्रेरित कहते हैं, ''किसी अन्य में उद्धार नहीं मिलता, क्योंकि स्वर्ग के नीचे कोई अन्य नाम लोगों को नहीं दिया गया है जिसके द्वारा हम बचाए जाएँ'' (प्रेरितों के काम 4:12) ! जब तक रोमन कैथोलिक कलीसिया यीशु मसीह, प्रेरितों और बाईबल के प्रति अनाज्ञाकारी रहती है, वह दुनिया में कभी अन्य मसीही कलीसियाओं को औपचारिक रूप से स्वीकार नहीं कर सकती !

सभी सच्ची मसीही कलीसियाएँ यीशु मसीह को पूरी मसीही कलीसिया का ''प्रभ'' (1 कुरिन्थियों 12:3), ''मुक्तिदाता'' (मत्ती 1:21) ''धर्माध्यक्ष'' और ''चरवाहा'' होने का अंगीकार करती हैं, कि पवित्र आत्मा पृथ्वी पर यीशु का प्रतिनिधि है और कि यीशु मसीह के बाहर कोई मोक्ष नहीं है !

ङ संप्रदाय का ऐतिहासिक विकास (पूर्वी रूढ़िवादी और पश्चिमी रोमन कैथोलिक कलीसियाओं के बीच विभाजन) (ई.600 – 1517)।

1. पूर्वी और पश्चिमी कलीसिया के बीच मनमुटाव।

मध्य युग 600–1517 तक रहा । पहली शताब्दी की इस अवधि के दौरान पश्चिमी लैटिन कलीसिया और पूर्वी यूनानी कलीसिया के बीच मनमुटाव विकसित हुआ। 1204 में आखिरकार इस मनमुटाव ने एक स्थायी फूट का नेतृत्व कियज्ञं

(1) रोम में प्रेरितों का दिखना।

पहली सदी में यीशु मसीह के प्रेरितों ने कई स्वतंत्र (अर्थात आत्म प्रचार, स्वावलंबी और स्वराज्य) मण्डलियों की स्थापना की थी।

हालांकि दूसरी से चौथी शताब्दी तक धर्माध्यक्ष और धर्माध्यक्षों के परिषदों के साथ नेतृत्व की पदानुक्रम व्यवस्था विकसित हुई। पूर्वी रोमी साम्राज्य में सभी धर्माध्यक्षों की समानता की एक मजबूत भावना थी, लेकिन पश्चिमी रोमी साम्राज्य में एक धर्माध्यक्ष एकलौता शासक बनना चाहता था। शुरुआत में पूर्वी धर्माध्यक्ष परिषदों में पश्चिमी धर्माध्यक्षों से अधिक सक्रिय थे। फिर भी पश्चिमी कलीसिया ने दुनियावी परिषदों के निर्णयों को स्वीकार कर लिया। पूर्वी धर्माध्यक्ष अधिक महाविद्यालय के धर्माध्यक्ष थे, जबकि रोम के धर्माध्यक्षों ने एक सम्राट के रूप में कार्य किया। पश्चिमी रोमी साम्राज्य में पोप (अर्थात, ''मुख्य धर्माध्यक्ष'' या ''पहला धर्माध्यक्ष'') ने ''सभी धर्माध्यक्षों का धर्माध्यक्ष'' होने का दावा किया। इस प्रकार रोम को ''मुख्य धर्माध्य'' या ''उच्चतम धर्माध्यक्ष''[27] की गद्दी के रूप में माना जाने लगा क्योंकि प्रेरित पतरस और प्रेरित पौलुस दोनों ने रोम में परिश्रम किया था।

(2) पूर्व में सम्राट की राजशाही।

पृथ्वी पर बाइजैन्टियम (अर्थात् कांस्टेंटिनोपल या इस्तांबुल) में रोमी सम्राट की राजशाही को स्वर्ग में परमेश्वर की राजशाही के ''नमूने'' (''छवि'' के लिए यूनानी शब्द) के रूप में माना जाता था। पूर्वी रोमी साम्राज्य में सम्राट को पृथ्वी पर परमेश्वर का प्रतिनिधि होने के लिए माना जाता था। पूर्वी कलीसियाओं के लोग गिरजे में मसीह (स्वर्ग में राजा) के दर्शाये नमूने और महल में जीवित सम्राट (पृथ्वी पर सम्राट) के नमूने के सामने दण्डवत करते थे।

पूर्व में पूर्वी कलीसिया और रोमी राज्य के बीच अलगाव की कोई कठोर रेखा नहीं थी। कलीसिया और राज्य को एक जीव के रूप में माना गया। पूर्वी कलीसिया (अपने धर्माध्यक्ष या वयोवृद्ध के माध्यम से) लोगों की आत्माओं की परवाह करती थी और बाइजैन्टियम में रोमी सम्राट (पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में) लोगों के शवों की परवाह करता था । रोमी सम्राट ने परिषदों को संभोदित किया, धर्माध्यक्षों ने फैसला किया की सच्चा विश्वास क्या है जिसे लोगों को प्रतीति करनी थी और रोमी सम्राट परिषद के फरमान भी जारी किया करता था !

(3) पश्चिम में पोप के निरंकुश कार्य ।

पश्चिम में जंगली लोगों के हमलों ने पश्चिमी रोमी साम्राज्य को तोड़ दिया था और इसने केवल पश्चिमी कलीसिया के निरंकुश ढांचे को मजबूत करने के लिए कार्य किया। क्योंकि सम्राट रोम से राज नहीं कर रहा था, रोम में पोप ने आध्यात्मिक के साथ–साथ राजनीतिक दायरे में अधिकार ग्रहण किया।

मध्य युग के दौरान कई युरोपीय जनजातियाँ पश्चिमी कलीसिया में जोड़ दी गयीं।

• एक तरफ, जनसंख्या एक राज्य कलीसिया चाहती थी – अर्थात, एक राज्य में एक ही कलीसिया।

• दूसरी तरफ, पोप कलीसिया राज्य चाहता था – अर्थात, संसार में एक ही राज्य एक ही रोम की कलीसिया के शासन के निचे। पोप कलीसिया और राज्य दोनों पर शासन करना चाहते थे। लेकिन पश्चिम में पोप को अभी तक पृथ्वी पर परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में माना नहीं गया था ! तो वहाँ एक हाथ पर राजनीतिक राज्यों के राज–वंश्यों और दूसरे हाथ पर पश्चिमी कलीसिया के पोप के बीच एक निरंतर संघर्ष था।

(4) पश्चिम में पादरी (कार्यालय) और गृहस्थ–वर्ग (साधारण विश्वासी)।

पूर्व में कई जब्री मसीह शिक्षित पुरुष होने के साथ–साथ जब्री धर्मशास्त्री भी थे। उन्होंने धर्मशास्त्र पढ़ा, लिखा और पढ़ाया। लेकिन पश्चिम में जंगली हमलों का परिणाम यह तथ्य था कि पश्चिम में ज्यादातर जब्री लोग पढ़ या लिख नहीं सकते थे। यही कारण है कि वे धार्मिक मुद्दों को समझ नहीं सके। पश्चिम में शिक्षा और धर्मशास्त्र केवल पश्चिमी कलीसिया में पादरियों के लिए परिरक्षित वस्तु बन गए। पश्चिमी कलीसिया में शिक्षित पादरियों और अनपढ़ गृहस्थ–वर्ग के बीच एक तीखा विभाजन विकसित हो गयज्ञं

(5) पूर्व और पश्चिम में धार्मिक विकास।

पूर्वी यूनानी कलीसिया, अधिक काल्पनिक बन गई थी, जबकि पश्चिमी लैटिन कलीसिया और अधिक व्यावहारिक हो गई। पूर्वी यूनानी कलीसिया ने धर्म शिक्षा को आराधना और मरणोत्तर गित के संदर्भ में समझा, जबकि पश्चिमी लैटिन कलीसिया रोमी कानून से निकले कानूनी विचार से प्रभावित थी।

जब त्रिएकता के बारे में सोच रहे थे, पूर्वी यूनानी कलीसिया ने ईश्वरत्व या ईश्वरीय स्वभाव[28] के तीन–भागों से शुरू किया। जबकि पश्चिमी रोमी कलीसिया ने ईश्वरत्व की एकता के साथ शुरू किया।

---

[27] यूनानीः आर्ची–एपिस्कोपोस। ''मुख्य धर्माध्यक्ष की नजर'' एक मुख्य धर्माध्यक्ष की धर्माध्यक्ष व्यवस्था है, कोई जो सभी धर्माध्यक्षों ऊपर नियुक्त किया गया है।

[28] यूनानीः हूपोस्टासिस

जब क्रूस पर चढ़ाये जाने पर परिलक्षित किया गया, पूर्वी यूनानी कलीसिया ने मुख्य रूप से मसीह के बारे में विजेता (पुनर्जीवित) के रूप में सोचा, जबकि पश्चिमी रोमी कलीसिया ने मुख्य रूप से मसीह के बारे में शिकार (क्रूस पर चढ़ाया गया) के रूप में सोचा।

पूर्वी यूनानी कलीसिया ने देवत्वारोपण के बारे ज्यादा बात की (सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में मसीह) (ग्रीकः पेंटाक्रेटर), जबकि पश्चिमी रोमी कलीसिया ने छुटकारे की अधिक बात की (मुक्तिदाता के रूप में मसीह) ।

जबकि सिद्धांत और जीवन के संबंध में, पूर्वी कलीसिया ने सैद्धांतिक निर्णय सभी धर्माध्यक्षों के परिषदों के अधीन किए, पश्चिमी कलीसिया ने उनके पोप की अचूकता को अपने विशेषाधिकार के रूप में माना।

(6) पश्चिमी पोप ने सार्वभौमिक सामर्थ का दावा किया।

पश्चिमी कलीसिया के केंद्रीकृत और राजतंत्रीय संरचना ने पहले पोप की पश्चिम में पूर्ण शक्ति का दावा करने के लिए नेतृत्व किया। लेकिन जब पश्चिम में पोप ने पूर्व में भी पूर्ण शक्ति का दावा करना शुरू किया, मुसीबत पैदा होना बाध्य हो गया।

(7) पश्चिमी पोप के कुछ दावे ।

• पोप इनोसेंट 1 (401–417) खुद के लिए दुनिया के सभी अन्य धर्माध्यक्षों की तुलना में एक उच्च अधिकार का दावा किया और शीर्षक ''पापा'' (पोप) का दावा केवल खुद के लिए किया।

• पोप ग्रेगरी 1 (590–615) ने दावा किया है कि पोप के पास न केवल आध्यात्मिक मामलों में सबसे अधिक अधिकार है, लेकिन सांसारिक मामलों में भी सबसे अधिक अधिकार है।

• पोप निकोलस 1 (858–867) रोम के धार्मिक प्रधान की ताकत को अन्य चार धार्मिक प्रधानों और कलीसिया में अन्य उच्च धर्माध्यक्षों और कलीसिया के बाहर सभी कैसर की ताकत से ऊँचा उठाया।

• पोप निकोलस 2 (1059) ''मेख्यों'' के लिए नए पोप का चुनाव करने का अधिकार प्रत्यायोजित किया, जिसमे 6 धर्माध्यक्ष, 50 पादरी और 14 सेवकों का महाविद्यालय शामिल था, सभी रोम के शहर में रहने वाले !

• पोप ग्रेगरी 7 (1073–1085) दुनिया के साथ कलीसिया के विसंघटन को लागू कियाय कलीसिया पर मठवासीपन के आदर्शों को लागू कियाय धर्माध्यक्षों और उच्च पदवी के मौजूदा ब्रह्मचारी को कलीसिया की सभी पदवियों पर लागू किया। विवाहित पादरियों को निकाल दिया गया। पादरी अब जब्री नेताओं सांसारिक लोगों द्वारा नियुक्त नहीं किये जाते थे। उसने कलीसिया –राज्य के माध्यम से दुनिया भर में एक धर्मतन्त्र स्थापित करने की कोशिश की, जिसमें पोप (सूर्य का प्रतीक) ने पृथ्वी पर मसीह की जगह ले ली और सभी राजाओं (चंद्रमा का प्रतीक) पर शासन किया।

• पोप इनोसेंट 3 (1215) परिभाषित किया ''पूर्व कैथेड्रा'': अपनी पवित्र कुर्सी से पोप का एःलान निर्णय सुनाना अचूक नया सिद्धांत बन गया। उसने बयान की पुष्टि की, ''विश्वासियों की सिर्फ एकमात्र सार्वभौमिक कलीसिया है, जिसके बहार कोई बिल्कुल भी बचा नहीं है।''

• पोप इनोसेंट 4 (1243–1254) दुनिया के सभी धर्माध्यक्षों के ऊपर (रोमी) मेख्यों को रखा गया और मानसेवी की निशानी के तौर पर लाल टोपी पहनते थे।

• पोप बोनिफेस 8 (1294–1303) पोप का आदेश पत्र जारी किया जोउनम सैन्कटम (1302) कहलाया। उसमे यह कहा गया कि सांसारिक तलवार आध्यात्मिक तलवार के अधीन है और सांसारिक शक्ति आध्यात्मिक शक्ति के अधीन है। उसने यह भी घोषणा की कि पोप की पूर्ण शक्ति में विश्वास मुक्ति के लिए जरूरी है !

(8) पोप की शक्ति को सीमित करने के लिए परिषदें असफल रहीं ।

पश्चिमी कलीसिया के पोप का प्रभाव अधिक से अधिक हो गया जब तक ईस्वी 1204 में पूर्वी और पश्चिमी कलीसिया के बीच विभाजन पश्चिमी जेहादियों द्वारा कांस्टेंटिनोपल के सैन्य बर्खास्त के साथ अंतिम बन गया।

पश्चिमी परिषद ''दुनियावी'' नहीं रहे (दुनिया–भर), क्योंकि लियोन्स 2 (ई. 1274) की 14 वीं परिषद से पश्चिमी रोमी कैथोलिक कलीसिया पूर्वी रूढ़िवादी कलीसियाओं को परिषदों में शामिल करने में विफल रही।

तथाकथित सुधार परिषदें निम्नलिखित थीरू मान्यता न प्राप्त पीसा की परिषद (ई 1409), कॉन्सटांज (विएना) (ई.1414–1418) की 16 वीं परिषद और फ्लोरेंस की 17 वीं परिषद (बेसल) (ई. 1431–1443) । सुधार परिषदों ने पोप की शक्ति को तोड़ने और पोप (रोम के धर्माध्यक्ष) के ऊपर धर्माध्यक्षों की परिषद स्थापित करने के लिए कोशिश की। दुर्भाग्य से यह विफल रहा और श्रेणीबद्ध सिद्धांत ने ऊपरी हाथ हासिल किया ।

(9) पोप का पूर्ण अधिकार ।

सुधार जिसका परिणाम प्रतिवाद करनेवाली मण्डलियाँ हुईं ईस्वी 1517 में मार्टिन लूथर के साथ जर्मनी में शुरू हुआ। प्रतिवाद करनेवाले मानते हैं कि केवल बाईबल का सही ढंग से अनुवाद ही अभ्रांत है।

ट्रेंट (ई. 1545–1549) की 19 वीं परिषद एक सुधार–विरोधी परिषद थी। इसने लूथर, काल्विन, और दूसरों के विधर्मों की निंदा की। इसने परम प्रसाद, मास के पवित्र बलिदान, संस्कारों (विशेष रूप से बपतिस्मा और पवित्र आदेश) और शादी, यातना, भोग और छवियों के उपयोग की शिक्षाओं पर फरमान जारी किए।

रोम (ई. 1869–1870) में वेटिकन 1 की 20 वीं परिषद ने 18 वीं जुलाई 1870 को रोमी कैथोलिक कलीसिया के सदस्यों के महान प्रभाव के तहत ''पोप की अभ्रांतता'' की घोषणा की और परिषदों के सभी लिए निर्णयों को पोप के अनुमोदन के अधीन कर दिया !

पोप की अभ्रांतता एक हठधर्मिता थी जिसमें रोमी कैथोलिक कलीसिया के सभी सदस्यों को विश्वास करना ही था ! पूर्वी कलीसिया में वयोवृद्ध (उच्चतम धर्माध्यक्ष) ने दृढ़ किया कि विश्वास (मसीही सिद्धांत और जीवन) के मामलों में अंतिम निर्णय मसीही कलीसिया के सभी धर्माध्यक्षों का प्रतिनिधित्व करते हुए परिषद के साथ ही होगा ।

वेटिकन परिषद (1870) से रोमी कैथोलिक कलीसिया के सदस्य पोप को ''चरवाहे और पूरी मसीही कलीसिया का सार्वभौमिक धर्माध्यक्ष'' के रूप में सम्मान देते हैं , एक घोषणा है विरोध में उसके जो प्रेरित पतरस बाईबल में सिखाता है, नामतः, कि कलीसिया का यीशु मसीह ''चरवाह (पादरी) और अधिदर्शक (धर्माध्यक्ष)'' है (1 पतरस 2:25; 1 पतरस 5:4) ! इस प्रकार, पोप ने यीशु मसीह की जगह ले ली !

रोमी कैथोलिक कलीसिया भी पोप को ''पृथ्वी पर मसीह के प्रतिनिधि'' के रूप में मानती है। लेकिन यह बयान उल्लंघन भी करता है उसका जो यीशु मसीह स्वयं पवित्र आत्मा के बारे में कहते हैं, ''मैं तुम्हे अनाथों के रूप में नहीं छोडूँगा; मैं तुम्हारे पास आऊँगा।'' यह दूसरा सलाहकार (प्रतिनिधि) हमेशा तुम्हारे साथ होगा और तुम्हारे अन्दर होगा। यह तुम्हें वह सब बातें याद दिलायेगा जो मेने तुमसे कही हैं (यूहन्ना 14:16–17,26)। मैं यह सलाहकार को तुम्हारे पास भेजूँगा। वह सब सत्य में तुम्हारा मार्गदर्शन करेगा । वह मेरी महिमा करेगा । वह उसमे से लेगा जो मेरा है और उसे आपको ज्ञात करेगा (यूहन्ना 14:16–17,26, यूहन्ना 16:7–15) ! इस प्रकार, पोप ने पवित्र आत्मा की जगह भी ले ली ।

इस कारणवश रोमी कैथोलिक चर्च सिखाता है कि ''रोमी कैथोलिक कलीसिया के बाहर कोई मोक्ष संभव नहीं है''। इस प्रकार,रोमी कैथोलिक कलीसिया ने यीशु मसीह की केवल मुक्तिदाता के रूप में की जगह भी ले ली। यह बयान उसके विपरीत है जो यीशु कहते हैं, ''मैं मार्ग हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं आ सकता''(यूहन्ना 14:6)। यह उसके भी विपरीत है जो यीशु मसीह के प्रेरित कहते हैं, ''उद्धार किसी और में नहीं मिलता, क्योंकि स्वर्ग के नीचे और कोई दूसरा नाम लोगों को नहीं दिया गया जिसके द्वारा हमें जरुर बचना चाहिए'' (प्रेरितों के काम 4:12) !

यही कारण है कि रोमी कैथोलिक कलीसिया औपचारिक रूप से दुनिया में अन्य मसीही कलीसियाओं को मान्यता नहीं देता है ! फिर भी रोमी कैथोलिक कलीसिया सभी मसीही कलीसियाओं को फिर से रोमी कैथोलिक कलीसिया के नियंत्रण में लाने के लिए कड़ी कोशिश करती है।

(10) मत्ती 16:18–19।

• यीशु ने प्रेरित पतरस को कभी ''उच्चतम पदवी'' नहीं दिया। यह मत्ती 16:18–19 में लिखे यीशु मसीह के शब्दों का खंडन करेगी कि ''जो कोई भी तुम में से बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा दास हो, और जो भी पहला होना चाहे, तुम्हारा गुलाम होना चाहिए'' (मत्ती 20: 25–28)!

• और यीशु मसीह के प्रेरितों के पास कोई उत्तराधिकारी नहीं है । यीशु ने प्रेरित पतरस का उपयोग किया था यहूदियों के बीच पहली ऐतिहासिक मण्डली स्थापित करने के लिए (प्रेरितों के काम 2:14–42), अर्ध–यहूदियों के बीच पहली ऐतिहासिक मण्डली (सामरी लोग, प्रेरितों के काम 8:4–17) और पहली ऐतिहासिक मण्डली गैर–यहूदियों के बीच (अन्यजाति, प्रेरितों के काम 10:9–48)। इस प्रकार उसने मत्ती 16:18–19, मत्ती 18:18 और प्रेरितों के काम 1:8 में बयानों को पूरा किया ।

• मत्ती 16:18–19 पतरस के पोप के रूप में होने की बात नहीं करता, लेकिन यीशु मसीह के प्रेरितों को मसीही कलीसिया की

ऐतिहासिक नींव के रूप में (देखें इफिसियों 2:20 और प्रकाशितवाक्य 21:14)। एक ऐतिहासिक नींव के ''उत्तराधिकारी'' नहीं हो सकते । यीशु मसीह के प्रेरितों के कोई ''उत्तराधिकारी'' नहीं थे, क्योंकि एक भी व्यक्ति अर्हता प्राप्त नहीं करेगा ! बाईबल के अनुसार यीशु मसीह का प्रेरितों को यीशु मसीह के जीवन, विशेष रूप से मृत्यु और जी उठने की आंख और कान गवाही बनना जरुरी है (प्रेरितों के काम 1:21–22) और वह व्यक्तिगत रीति से चुना, बुलाया, प्रशिक्षित और यीशु के द्वारा बाहर भेजा हुआ होना चाहिए (मरकुस 3:13–14; लूका 6:13, यूहन्ना 20:21, प्रेरितों के काम 26:15–18; 1 कुरिन्थियों 9:1) !

(11) सच्ची मसीही कलीसिया केवल यीशु मसीह को दुनिया भर में कलीसिया के प्रमुख के रूप में अंगीकार करती है।

सभी सच्ची मसीही मण्डलियाँ यीशु मसीह को चरवाहा या पासबान[29] और अधिदर्शक या पृथ्वी पर पूरी मसीही कलीसिया का धर्माध्यक्ष[30] के रूप में अंगीकार करतीं हैं (यूहन्ना 10:16; इब्रानियों 13:20; 1 पतरस 2:25; 1 पतरस 5:4) और वे पवित्र आत्मा को पृथ्वी पर यीशु मसीह के प्रतिनिधि[31] के रूप में अंगीकार करतीं हैं (यूहन्ना 14:16–17,26, यूहन्ना 16:7–15) ! ना कोई पोप और ना ही आज की कलीसियाओं के अगुवों द्वारा दावा किए कोई शीर्षक (उदाहरण के लिए ''प्रेरित'', ''नबी'', ''धर्माध्यक्ष'', ''याजक'', ''पादरी'', ''आदरणीय'', आदि) यीशु मसीह की इस पदवी को ले सकते हैं !

2. ''फिलिओक'' मुद्दा।

नायसिन–कॉन्स्टैण्टिनोपॉलिटन पंथ (325 और 381) मूल रूप से पढ़ते हैं, ''मैं प्रतीति करता हूँ कि ... पवित्र आत्मा, प्रभु, जीवन देने वाला, जो पिता से बढ़ता है, जिसकी पिता और पुत्र के साथ मिलकर आराधना की जाती है और मिलकर महिमा होती है''। लगता है इसने अरियसवाद (जिसने मसीह के ईश्वरीय स्वाभाव पर हमला किया) के खिलाफ रक्षा के रूप में स्पेन में जन्म लिया था (रोमियों 8:9–10; 1 पतरस 1:11)।

पश्चिमी लैटिन कलीसिया ने टोलेडो के परिषद के दौरान (589), शब्द जोड़े ''और पुत्र की ओर से'' (लैटिन में फिलिओक) पंथ करने के लिए कि अब इसे पढ़ते है, ''मुझे विश्वास है ... पवित्र आत्मा, प्रभु, जीवन देने वाला, जो पिता से और बेटे से आया में'' । यह जोड़ फ्रांस और जर्मनी में फैलाया, शारलेमेन द्वारा स्वागत हुआ और फ्रैंकफर्ट की परिषद (794)में अपनाया गया, एक अर्द्ध–मूर्ति परिषद में । शारलेमेन की अदालत में लेखकों ने फिलिओक को विवाद के मुद्दे में बनाया और पूर्वी यूनानी कलीसिया पर विधर्म का आरोप लगाया। 1054 में पश्चिमी मेख्य हम्बर्ट ने कांस्टेंटिनोपल में हागिया सोफिया की वेदी पर बहिष्कार का एक बुल (पोप की मोहर लगा खुला पत्र) रखा, लेकिन इसे खारिज कर दिया गया था। इस घटना ने पूर्वी यूनानी कलीसिया और पश्चिमी लैटिन (रोमी) कलीसिया के बीच फूट की शुरुआत की।

1109 में कांस्टेंटिनोपल के पूर्वी धर्म प्रधान सेर्गिअस ने डिप्टीच्स में से पश्चिमी पोप सेर्गिअस 4 का नाम निकाल दिया, जो की सभी धर्म प्रधानों के नाम की सूची थी, जीवित और मृत, जिनको ''रूढ़िवादी'' की मान्यता प्राप्त थी। प्रत्येक धर्म प्रधान ऐसी सूची रखता था । तकनीकी तौर पर, रोम की पश्चिमी कलीसिया और कांस्टेंटिनोपल की पूर्वी कलीसिया ऐक्य से बाहर थीं ।

3. धर्मयुद्ध।

धर्मयुद्ध (1096–1270) ''पवित्र युद्ध'' के रूप में इस्लामी फातिमियों और एक हाथ पर सेल्युक्स के द्वारा फिलिस्तीन में मसीहों और तीर्थयात्रियों पर दमन और उत्पीड़न और दूसरी ओर यरूशलेम को मुक्त करने के लिए पिआचेंजा और क्लेरमोंट (1095) में बैठकों में पोप अर्बन 2 की बुलाहट (अत्यंत गैर–मसीह) के लिए एक प्रतिक्रिया थी।

मसीहों को याद रखना चाहिए कि पवित्र युद्ध यीशु मसीह की शिक्षाओं और बाईबल (मत्ती 5:38–48) के पूरी तरह से खिलाफ हैं !

पश्चिमी लैटिन कलीसिया से धर्मयोद्धाओं ने 1098 में तुर्कों से अन्ताकिया पर कब्जा ले लिया, 1099 में यरूशलेम और पश्चिमी लैटिन धर्म प्रधानों की स्थापना की। 1187 तक यरूशलेम में एक पूर्वी यूनानी धर्म प्रधान और एकर में एक पश्चिमी लैटिन धर्म प्रधान था। दो प्रतिद्वंद्वी धर्माध्यक्ष एक ही सिंहासन का दावा करते थे और दो (तथाकथित ''मसीही'') समुदायों (पूर्वी और पश्चिमी) ने घृणा और कड़वाहट की आत्मा का परिचय दिया।

---

[29] यूनानीः पोईमन
[30] यूनानीः एपिस्कोपोस
[31] यूनानीः पैराक्लेटोस

पूर्वी बीजान्टिन निवासियों ने कांस्टेंटिनोपल 1182.में कई पश्चिमी लैटिन निवासियों की हत्या की। पश्चिमी धर्मयोद्धाओं ने जवाब दिया और 1204 में कांस्टेंटिनोपल को बर्खास्त कर दिया है और इसने पूरब में रूढ़िवादी कलीसिया और पश्चिम रोमी कलीसिया के बीच निश्चित विभाजन या फूट डाल दी ।

4. पूर्वी और पश्चिमी मसीही समुदायों ।

(1) वयोवृद्ध ।

रोम और कांस्टेंटिनोपल के वयोवृद्ध बीच प्रतिद्वंद्विता ने अंत में संसार भर[32] की मसीही कलीसिया में पहले महान विभाजन का नेतृत्व किया। पूर्व में मसीही कलीसिया में कई स्वतंत्र रूढ़िवादी कलीसियाएँ (संप्रदाय) शामिल थे, प्रत्येक अपने वयोवृद्ध के साथ । पश्चिम में मसीही कलीसिया को रोमी कैथोलिक कलीसिया कहा जाता था और रोम का पोप उनका मुखिया था। रूढ़िवादी कलीसियाओं के वयोवृद्ध और रोम का पोप अब अपने अधीन सभी धर्माध्यक्षों पर प्रभुता करते थे ।

(2) मुख्य धर्माध्यक्ष ।

बाद में वहां पश्चिम में इतने सारे धर्माध्यक्ष थे कि धर्माध्यक्षों और पोप के बीच अगुवों की एक और परत बन गई, नामतः, मुख्य धर्माध्यक्ष (शाब्दिकः पहले धर्माध्यक्ष)। एक मुख्य धर्माध्यक्ष अपने प्रांत (देश) में सभी धर्माध्यक्षों की अध्यक्षता करता था । पश्चिम और पूर्व में श्रेणीबद्ध नेतृत्व प्रणाली अंत में अपने मौजूदा स्वरूप पर पहुँच गई थी ।

(3) कलीसिया का पापी इतिहास ।

मसीहों को याद रखना चाहिए कि यह ऐतिहासिक विकास अनात्मिक कलीसिया के अगुवों द्वारा बनाया गया कलीसिया का पापी इतिहास था और जिसके पास कोई बाईबल का अधिकार या औचित्य नहीं है ! मसीही जो ''उससे आगे नहीं जाते जो लिखा है'' बाइबिल में (1 कुरिन्थियों 4:6) पश्चिमी रोमी कैथोलिक कलीसिया में और साथ ही पूर्वी रूढ़िवादी कलीसिया में नेतृत्व के इस ऐतिहासिक विकास को अस्वीकार करते हैं ।

च. संप्रदायों के सतत विकास (कट्टर सुधार) (ईसवी 1517)।

1. सुधार के अग्रणी ।

(1) जॉन वीक्लिफ (वायक्लिफ्फे) (1324–1384)।

वह इंग्लैंड में ऑक्सफोर्ड और लुटरवॉर्थ में रहते थे। उन्होंने धर्मशास्त्र में एक डॉक्टर था। उन्होंने खुले तौर पर पोप की ताकत के दुरुपयोग का विरोध किया, लगभग 1381 में लैटिन वुल्गेट से अंग्रेजी में बाईबल का अनुवाद किया और अवशेष, छवियों, भोग के पत्र के इस्तेमाल,और मास के विरुद्ध और विशेष रूप से तत्व परिवर्तन के सिद्धांत के विरुद्ध, अंगीकार के विरुद्ध, पुरोहिताई, मठ जीवन और रोमी कैथोलिक कलीसिया की महान्तशाही के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। कॉन्सटांज की परिषद (1415) में निन्दित किए जाने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई। 1417 में उनकी हड्डियों को खोदा और जला दिया (क्योंकि विधर्मियों को जलाया गया था) !

(2) जोहानस हस (1369–1415)।

वे बोहेमिया (पोलैंड) में रहते थे और रोमी कैथोलिक कलीसिया के खिलाफ वीक्लिफ के शोध करे से प्रभावित थे । उन्होंने रोमी कैथोलिक कलीसिया के भीतर हनन के खिलाफ लड़ाई लड़ी। प्राग में उनके शोध करे की निंदा की गई और 1415 में कॉन्सटांज की परिषद के दौरान उनकी निंदा हुई और जला दिया गए थे ।

2. मसीही कलीसिया में दूसरा महान विभाजन ।

(1) सुधार।

सोलहवीं शताब्दी के दौरान, रोमी कैथोलिक कलीसिया के अंदर कई अगुवों के हनन इतने महान थे कि कई लोगों को रोमी कैथोलिक कलीसिया के अंदर एक सुधार शुरू कर दिया । लोग जैसे लूथर (31 अक्टूबर 1517), ज्विन्गली (1522), केल्विन (1536), नॉक्स और अन्य रोमी कैथोलिक कलीसिया में अंदर से सुधार करना चाहते थे, लेकिन उस समय रोमी कैथोलिक कलीसिया के नेतृत्व नें सुधार का विरोध किया और अपनी ताकत पर बने रहे ।

---

[32] यूनानीः कैथोलिकोस

ट्रेंट की परिषद (1545–1549) ने षविधर्मियों श्के रूप में लूथर, केल्विन और दूसरों की निंदा की है और वे रोमी कैथोलिक कलीसिया से बहिष्कृत कर दिए गए थे । लेकिन रोमी कैथोलिक कलीसिया के संप्रदाय से बहिष्कार का परिणाम दुनिया भर में मसीह की देह से बहिष्कार नहीं है ! हालांकि इसने दुनिया भर में कलीसिया के भीतर 1517 में रोमी कैथोलिक कलीसिया और सुधार की कलीसिया के बीच दूसरा महान विभाजन करने के लिए नेतृत्व किया ।

(2) सुधार के द्वारा दिया जोर ।

सुधार कलीसिया पहली शताब्दी ईस्वी की नए नियम कलीसिया की ओर लौटना चाहती थी। जबकि रोमी कैथोलिक कलीसिया ने मांग की और अपनी पहचान पाई और बाहरी चीजों में शक्ति पाई, सुधार कलीसिया ने लोगों को अंदरुनी सुधार करने के लिए बुलाया । रोमी कैथोलिक कलीसिया ने कलीसिया की पदवियों (पादरी, धर्माध्यक्ष, मुख्य धर्माध्यक्ष, पोप) की शक्ति, संस्कारों और अच्छा कामों पर बल दिया। सुधार कलीसिया ने परमेश्वर के वचन पर जिस रूप में बाइबल में दर्ज है, विश्वास द्वारा औचित्य और एक परिवरतित जीवन (शुद्धीकरण) पर बल दिया ।

3. कई कलीसिया संप्रदायों में मसीही कलीसिया का चल रहा विभाजन।

(1) इंजील आंदोलन।

सोलहवीं सदी में पहले से ही, कई इंजील आंदोलन यूरोप, इंग्लैंड और अमेरिका में शुरू हो गए। पश्चिम में व्यक्तिवाद की भारी वृद्धि ने कई कलीसिया संप्रदायों की स्थापना के लिए नेतृत्व किया। क्योंकि यह कलीसिया संप्रदाय मानव संगठन हैं, वे अन्य कलीसिया संप्रदायों में फिर से विभाजित हो जाते हैं । प्रत्येक कलीसिया संप्रदाय कलीसिया नेतृत्व का अपना ही रूप विकसित किया है।

(2) कलीसिया का पापमय इतिहास।

मसीहियों को याद रखना चाहिए कि यह सब पापमय कलीसिया का इतिहास था जो मानव अगुवों द्वारा बनाया गया और इसमे बाईबल का कोई अधिकार या औचित्य बिल्कुल भी नहीं था ! मसीही जो ''उससे आगे नहीं जाते जो लिखा है'' बाइबिल में (1 कुरिन्थियों 4:6) इतिहास में सभी कलीसियाओं में नेतृत्व के इस ऐतिहासिक विकास को अस्वीकार करते हैं । परमेश्वर विभिन्न संप्रदायों में बंटवारे को शारीरिक या सांसारिक कहता है।

इस फूट का असली कारण अपरिपक्वता है (मसीही ''बच्चे'' बने रहे) (1 कुरिन्थियों 3:1–4) । समय की माँग शिष्यत्व है; मसीहियों की मदद करनी परिपक्व और कार्य पद्धति मसीही बनने के लिए (मत्ती 28:18–20) !

छ. मुख्य संप्रदाय (आधुनिक काल)।

1. धर्माध्यक्षीय कलीसियाएँ ।

धर्माध्यक्षीय कलीसियाएँ आम तौर पर मानती हैं कि केवल एक ही सच्ची कलीसिया है और वह कैथोलिक (दुनिया भर में फैली) है। स्थानीय कलीसियाओं में कोई स्वतंत्रता नहीं है। कलीसिया को दुनिया के भीतर एक दृश्य एकता बनकर रहना चाहिए। दृश्य एकीकृत कलीसिया प्राचीन रोमी साम्राज्य का एक प्रतिबिंब है।

जोर धर्माध्यक्ष के पद पर है, जो अन्य सभी कलीसियाओं को गले लगाता है।

वे मसीह को धर्माध्यक्ष परिषद के माध्यम से दुनिया भर में कलीसिया शासन रूप में मानते हैं (या रोमी कैथोलिक कलीसिया के मामले में: रोम के धर्माध्यक्ष द्वारा – पोप) और एक धर्माध्यक्ष के माध्यम से स्थानीय मण्डलियों को नियंत्रित करने वाला ।

2. सामूहिक कलीसियाएँ ।

सामूहिक कलीसियाएँ आम तौर पर मानती हैं कि हर स्थानीय कलीसिया (मण्डली) पूरी और सम्पूर्ण तरह से एक कलीसिया है और पूरी तरह से स्वतंत्र है। स्वतंत्र कलीसियाएँ (मण्डलियाँ) ज्ञान और व्यक्तिवाद के युग में स्वतंत्र लोगों का एक प्रतिबिंब है।

जहाँ कहीं सुसमाचार प्रचार किया है, लोगों विश्वास में आते हैं। विश्वासि खुद को एक मण्डली एकत्रित करते हैं (एक स्वतंत्र स्थानीय कलीसिया) जिसमें मसीह उपस्थित होता है (मत्ती 18:20) । वे स्वतंत्र रूप से खुद को बाईबल की कही बातों को करने के लिए आबद्ध रहते हैं। विश्वासी के पद पर जोर देने के लिए मण्डलियों को जानबूझके छोटे रखा जाता है । नई स्वतंत्र मण्डलियाँ पुरानी

स्वतंत्र मण्डलियों से अलग हो जाती हैं । कई स्वतंत्र मण्डलियाँ अक्सर मण्डलियों का एक ढीला महासंघ बना लेती हैं जिसमें प्रत्येक मण्डली पूरी तरह से स्वतंत्र रहती है ।

जोर विश्वासी के पद पर है, जो अपने ही परिचितों के दायरे के भीतर एक याजक, नबी और राजा है ।

वे मसीह को सीधे पवित्र आत्मा के माध्यम से विश्वासियों के हर स्वतंत्र मण्डली पर शासन करने वाला, बाईबल और मण्डली की सामान्य बैठक, जिसमें विश्वासि लोकतांत्रिक सिद्धांतों के अनुसार सभी महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं । आधुनिक व्यक्तिवाद और लोकतंत्र के प्रभाव के तहत, एक स्वतंत्र मण्डली एक पूरी मण्डली के रूप में इकठ्ठा होती है चर्च समिति का चुनाव करने के लिए, जिसका कार्य उन निर्णयों को काम में लाना है जो मण्डली की सामान्य बैठक के दौरान लिए गए थे । उच्चतम आधिकारिक निकाय मण्डली की सामान्य बैठक है ।

3. धर्मसभाओं की कलीसियाएँ ।

धर्मसभाओं की कलीसियाएँ आम तौर पर मानती हैं कि हर स्थानीय मण्डली पूरी और सम्पूर्ण तरह से मसीह की एक कलीसिया है, लेकिन यह कि अन्य स्थानीय सभाओं से पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं है और एक राष्ट्र या राज्य के भीतर एक छाता संगठन के तहत आयोजित की जानी चाहिए। छाता संगठन को एक धर्मसभा कहा जाता है (जिसका अर्थ है ''एक साथ मिलकर आना'') ।

धर्मसभा प्राचीनों का इकठ्ठा होना है जो स्थानीय मण्डलियों को पूरी एक के रूप में प्रतिनिधित्व करने के लिए चुने गए हैं । धर्मसभाओं की कलीसियाएँ राष्ट्र या राज्य का एक प्रतिबिंब हैं ।

जोर प्राचीनों के पद पर है। प्राचीनों को जरुर बाईबल निर्देशों के आधार पर चुना जाना चाहिए और जरुर धर्मसभा द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व किया जाना चाहिए।

वे पवित्र आत्मा के माध्यम से स्थानीय स्तर पर राष्ट्रीय या राज्य कलीसिया पर शासन, बाइबिल और कलीसिया के नियुक्त पद जैसे कि पादरी, प्राचीन और सेवक और क्षेत्रीय धर्मसभाएँ और एक राष्ट्रीय धर्मसभा के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर के रूप में मसीह को मानते हैं।

4. प्रेज़्वीटर संबंधी कलीसियाएँ ।

प्रेज़्वीटर संबंधी कलीसियाएँ[33] मानती हैं कि हर स्थानीय कलीसिया (मण्डली) मसीह की कलीसिया (1 कुरिन्थियों 12:27) का एक पूरा और दृश्य प्रकाशन है। संगठन के संबंध में स्थानीय कलीसिया (मण्डली) पूरी तरह से स्वतंत्र है, लेकिन परामर्श और सहयोग के संबंध में अन्य स्थानीय कलीसियाओं के परस्पर आश्रित है।

जोर प्राचीनों[34] के पद पर है और प्राचीन बाईबल निर्देशों के आधार पर चुने होने चाहिए । अलग–अलग स्थानीय मण्डली निकाय या प्राचीनों[35] की परिषद द्वारा संचालित है। जोर हर विश्वासी के पद पर भी है। हर विश्वासी अपने ही परिचितों के दायरे के भीतर एक याजक, नबी और राजा है।

वे मसीह को पवित्र आत्मा (यूहन्ना 16:1–15), बाईबल (इफिसियों 6:17) और प्राचीन निकाय (1 तीमुथियुस 3:1–7,14–15) के माध्यम से कलीसिया में अकेला और सर्वोच्च अगुवा और हर स्थानीय कलीसिया (मण्डली) में शासी के रूप में मानते हैं । प्रत्येक अलग–अलग मण्डली केवल बाईबल की शिक्षा के आधार पर और सम्पूर्ण मण्डली की बैठक के दौरान अपना निकाय या प्राचीनों का परिषद चुनती है। इस प्रकार, प्राचीन निकाय और सम्पूर्ण मण्डली की सामान्य बैठक जाँच में एक दूसरे को पकड़े रहती है । सबसे उच्च अधिकार बाईबल के माध्यम से मसीह के साथ है। सब से ऊपर प्राचीन निकाय को यह देखना चाहिए कि मसीह और बाईबल की मजबूत शिक्षाऐं कलीसिया में केंद्रीय खड़े हों । केवल दूसरे स्थान पर प्राचीन निकाय मण्डली की सामान्य बैठक के लक्ष्यों (उद्देश्यों) को पूरा करता है। प्राचीन निकाय सम्पूर्ण दिल से परामर्श लेता और दुनिया भर में मसीह की एक देह के अन्य प्राचीन निकायों के साथ सहयोग भी लेता है ।

---

[33] शब्द ''प्रेस्बायटेरिअल'', नाम प्रेस्बिटेरियन कलीसिया (एक संप्रदाय) के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए, जैसे कि शब्द ''कैथोलिक'' नाम रोमी कैथोलिक कलीसिया (एक संप्रदाय) के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए।

[34] यूनानी: प्रेसबुटेरोस

[35] यूनानी: प्रेसबटेररिओं

5. स्वतंत्र कलीसियाएँ ।

स्वतंत्र कलीसियाओं का मानना है कि हर स्थानीय कलीसिया (मण्डली) जातीय, सांस्कृतिक और नेतृत्व के प्रति सम्मान के साथ अन्य कलीसियाओं से पूरी तरह से स्वतंत्र होनी चाहिए । कभी कभी वे मानते हैं कि वे एकलौते सच्चे संप्रदाय के हैं। स्वतंत्र कलीसिया एक संस्कृति के भीतर राष्ट्रवाद और स्वतंत्र समूह का एक प्रतिबिंब है। स्वतंत्र कलीसिया की अगुवाई अक्सर एक करिश्माई या सत्तावादी अगुवा करता है, जो अक्सर स्वतंत्र कलीसिया का ''संस्थापक'' या ''स्थापक'' भी हो सकता है । इस तरह के अगुवे अक्सर खुद के लिए उत्तम शीर्षक का दावा करते है, जैसे: ''नबी'', ''प्रेरित'', ''धर्माध्यक्ष'', ''याजक'' या ''पादरी'' आदि । स्वतंत्र कलीसिया में अक्सर ऐसे कपड़े पहनते हैं और मृत्यूत्तर गित होते हैं जो दूसरों से अलग होते हैं।

एक तरफ जोर समूह की भाषा और संस्कृति पर पड़ता है और दूसरी तरफ जोर करिश्माई और सत्तावादी अगुवे पर पड़ता है, जो एक ही समय में अपनी ही कलीसिया संप्रदाय में याजक, नबी, राजा, प्रेरित या धर्माध्यक्ष है ।

वे मानते हैं कि मसीह करिश्माई और सत्तावादी अगुवे के माध्यम से स्वतंत्र कलीसिया का नेतृत्व करता है। यदि उनके पास एक कलीसिया परिषद या मंडल है, तो ये आम तौर पर सत्तावादी अगुवे के निर्णय की पुष्टि करते हैं ।

ज. नया नियम शिक्षण
(प्राचीन अपनी पदवी में)।

1. प्राचीन निकाय ।

नया नियम सिखाता है कि एक स्थानीय मण्डली का नेतृत्व किसी एक व्यक्ति के द्वारा नहीं, लेकिन प्राचीन निकाय (1 तीमुथियुस 4:14) द्वारा होना चाहिए ।

• सभी प्राचीन (प्रेरितों के काम 20:17) धर्माध्यक्ष (अधिदर्शक) और पादरी (चरवाह) उनके कार्यों (प्रेरितों के काम 20:28) के अनुसार कहलाये जाते हैं !

• सभी प्राचीन (तीतुस 1:5) अपने कार्य के अनुसार धर्माध्यक्ष (अधिदर्शक) (तीतुस 1:7) कहलाये जाते हैं ।

• सभी प्राचीन (1 पतरस 5:1) पादरी (चरवाह) और धर्माध्यक्ष (अधिदर्शक) (1 पतरस 5:2) उनके कार्य के अनुसार कहलाये जाते हैं और मुख्य पादरी के तहत कार्य करते हैं, जो यीशु मसीह है।

यह स्पष्ट रूप से दिखता है कि लूका, पौलुस और पतरस ने तीन शब्द प्राचीन , अधिदर्शक (धर्माध्यक्ष) और चरवाह (पादरी) अदले–बदले से इस्तेमाल किए !कलीसिया के इतिहास में इन शब्दों का कुछ मतलब और आज विभिन्न संप्रदायों में मतलब होने के बावजूद, नया नियम प्राचीनों, अधिदर्शकों और चरवाहों के बीच कोई फर्क नहीं करता है ! पुराने नियम में या नए नियम कलीसिया में अगुवों का कोई पदानुक्रम नहीं था !

कभी भी एक मण्डली का केवल एक ही अगुवा प्रभारी नहीं हुआ है, लेकिन हमेशा हर मण्डली के लिए स्थापित अगुवों का एक समूह था (प्रेरितों के काम 14:21; तीतुस 1:5) कलीसिया में, प्राचीन निकाय कहलाया[36] (1 तीमुथियुस 4:14) प्रत्येक अलग अलग मण्डली के लिए (प्रेरितों के काम 14:23; तीतुस 1:5)। प्राचीन निकाय के सभी प्राचीनों ने अपनी अलग अलग मण्डलियों के नेतृत्व की जिम्मेवारियों को साझा किया।

बाईबल में नेतृत्व हमेशा ''साझा नेतृत्व'' और ''सेवक नेतृत्व'' है (मत्ती 20:25–28; 1 पतरस 5:2–4) !

2. इन विभिन्न शब्दों के अर्थ।

तीन शब्दः प्राचीन, चरवाहे और अधिदर्शक तीन अलग–अलग कलीसिया कार्यालयों या तीन अलग–अलग कलीसिया पदों का वर्णन नहीं है। यह कलीसिया के एक कार्यालय का उल्लेख करते हैं, नामतः, प्राचीन का । यह कलीसिया के अगुवों के एक समूह का वर्णन दो दृष्टिकोण से करते हैं (उनका पद और उनके काम/कार्य) ।

---

[36] यूनानीः प्रेसबटेररिओं

• शब्द प्राचीन[37] पद का नाम है और आध्यात्मिक परिपक्वता, अनुभव और अगुवे की आज्ञा का अधिक से अधिक सम्मान व्यक्त करता है ।

• शब्द चरवाहा[38] और अधिदर्शक[39] प्राचीन के कार्यों की प्रकृति का वर्णन है। प्राचीन लोगों का नेतृत्व चरवाहों के रूप में करते हैं और अधिदर्शक कर के रूप में वे मण्डली की गतिविधियों और संपत्ति का प्रबंधन करते हैं ।

• निम्नलिखित शब्द उनके कार्य की प्रकृति का वर्णन भी करते हैंरू अगुवा या मार्गदर्शक[40] (इब्रानियों 13:7,17,24), मुखिया के रूप में व्यक्ति (शासक, निदेशक, प्रबंधक)[41] (रोमियों 12:8; 1 थिस्सलुनीकियों 5:12; 1 तीमुथियुस 5:17) और घर भण्डारी या प्रबंधक (शाब्दिकः अर्थशास्त्री)[42] (तीतुस 1:7)।

नया नियम सिखाता है कि एक स्थानीय मण्डली के सभी प्राचीन चरवाहे और उस मण्डली के अधिदर्शक हैं । एक स्थानीय मण्डली के सभी प्राचीन उस मण्डली के आधिकारिक चारागाही, शिक्षण और प्रबंधकीय कार्यों को साझा करते हैं !

3. अस्थायी नेतृत्व दल ।

जब नई मण्डलियों की स्थापना होती है, नेतृत्व में धर्म प्रचारक, कलीसिया स्थापक या अन्य मण्डली का प्राचीन और कलीसिया स्थापित करने के लिए आवश्यक कौशल के साथ मसीही लोग (पौलुस, बरनबास, मरकुस, सिलास, तिमोथी, लूका और तीतुस प्रेरितों के काम 13:1–5; प्रेरितों के काम 15:36–41; प्रेरितों के काम 16:1–3; प्रेरितों के काम 16:6–10; 2 कुरिन्थियों 8:23 में) । इस दल को कलीसिया स्थापना दल, नेतृत्व दाल या सरलता से दल कह सकते हैं । वे सेवक नहीं बुलाया जाने चाहिए, क्योंकि सेवक केवल तब ही नियुक्त किये जाने चाहिए जब वहाँ पहले से ही प्राचीन परिषद हो ।

नेतृत्व दल के कार्य हैंः मण्डली के इकठे होने पर नेतृत्व प्रदान करें, सुसमाचार प्रचार, शिष्यत्व प्रशिक्षण, पासबानी देखभाल, विश्वासियों को कौशल प्रदान करें और कुछ पुरुषों को संभावित भविष्य के अगुवे बनने के लिए विकसित करें ।

पहली प्राचीन परिषद की नियुक्ती पर नेतृत्व दल को भंग कर देना चाहिए (प्रेरितों के काम 14:21–23) ।

4. निष्कर्ष ।

मसीही कलीसिया में नेतृत्व का विकास एक लंबी और अशांत अवधि के माध्यम से होकर गया है।
इतिहास के इस सारांश का आपके विशेष चर्च (संप्रदाय) में नेतृत्व संरचना को बदलने का इरादा नहीं है !
लेकिन यह अध्ययन आपकी और आपकी मण्डली की मदद कर सकता है कि आप अपने नेतृत्व में और अधिक बाईबल आधारित बन सको और बाईबल अगुवों के बाईबल आधारित स्वभाव को बढ़ावा देने के लिए, नामतः कि ''आपके मध्य में जो कोई भी महान बनना चाहे आपका सेवक को, और जो कोई भी प्रथम होना चाहे आपका गुलाम बने'' (मत्ती 20:25–28)।

---

[36] यूनानीः प्रेसबुटेरिओन
[37] यूनानीः प्रेसबुटेरोस, हिन्दीरू याजक
[38] यूनानीः पोईमेन, लैटिन और हिन्दीरू पादरी
[39] यूनानीः एपिस्कोपोस, हिन्दीरू धर्माध्यक्ष (अथर्रू अधिदर्शक)
[40] यूनानीः हैगोमेनोस
[41] यूनानीः प्रो–इस्तामेनोस
[42] यूनानीः ओइकोनोमोज